मई–201 वर्ष अंक 12 उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मई–२०१६

परिश्रमी ही जग
अपना नाम कमात
सूखी बंजर धरती से
धान उगाता
श्रम–स्वेद से ही मानव
भाग्य बनात
ऋषि सत्यार्थप्रकाश में हमव
यही बात समझात

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ५३

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
M D H
मसाले
असली मसाले
सच - सच
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए प्रठनीक सौ समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ. सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११७
वैशाख शुक्ल प्रथमा
विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९२

May- 2016

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २४

हलचल २५

०४	वेद सुधा
०५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ५/१६
११	स्वामी श्रद्धानंद और महात्मा गाँधी
१५	ईश्वर जीव और प्रकृति
१८	पं. भीमसेन शर्मा
१६	अब भगवान् भी दौरे पर
२०	शिवभक्त चेतें!
२१	पं. भीमसेन शर्मा
२६	कथा सरित
२८	सत्यार्थ-पीयूष
२६	स्वास्थ्य

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - १२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१

(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमा

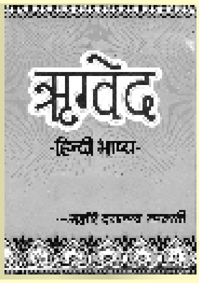

वेद सुधा

अग्नि का उपासक जागता है

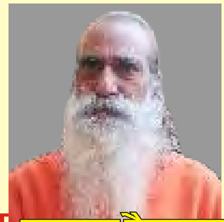

महात्मा चैतन्यमुनि

ओ३म् यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सा...
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥ - साम.१८२६

जो जागता है उसे ही (तमृचः) ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होता है, (सामानि) उसे ही उपासनाएँ व शान्तियाँ प्राप्त होती हैं, (सोमः) उसे ही सोम {शौर्य व वीरतादि} प्राप्त होता है, (सख्ये) उसे ही प्रभु की मित्रता प्राप्त होती है और उसे ही (न्योका अस्मि) निश्चित् निवास {सदा के लिए प्रभु का सान्निध्य} प्राप्त होता है। आगे वेद में बताया गया है कि जागता कौन है-

ओ३म् अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमयँ सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥ - साम.१८२७

अग्नि का उपासक जागता है। ऐसा उपासक ही (ऋचः कामयन्ते) ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करता है (तम् उ सामानि) उसे ही उपासनाएँ व शान्तियाँ प्राप्त होती हैं, (तम् अयम् सोमः) उसे ही सोम, वीर्य, शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जागने वाला व्यक्ति ही कहता है (आह तव सख्ये अहम् न्योकाः अस्मि) हे प्रभु मैं तेरी मित्रता में निश्चित निवास वाला हो गया हूँ।

अग्नि का उपासक अपने जीवन में बहुत सी उपलब्धियाँ प्राप्त करता है। अग्नि के गुणों के माध्यम से हम उन समस्त उपलब्धियों पर चर्चा करते हैं-

१. अग्रणी भवति- निरुक्त में आया है- अग्निः कस्मात् अग्रणी भवति- जो आगे ही आगे चलती है। अग्नि का उपासक चतुर्दिक उन्नति करता है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में वह पिछड़ता नहीं है। क्योंकि अग्नि में जो-जो गुण हैं उसे वह अपने जीवन में कार्यान्वित कर लेता है। अग्नि सदा ही उर्ध्वगमन करती है। उसके लिए आप चाहे कितनी ही बाधाएँ उत्पन्न करें मगर अपने लिए सदा ऊपर के लिए ही मार्ग खोजती है। उसे कोई किसी प्रकार से भी दबा नहीं सकता है, अग्नि स्वयं प्रकाशित है तथा सबको प्रकाशित करती है, अग्नि परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर सदा अपना विस्तार ही करती है, अग्नि में तेजस्विता है, वह तेजपूर्ण है इसलिए अग्नि का उपासक भी तेजोमय हो जाता है, अग्नि का एक गुण भस्मशीलता है। वह सब प्रकार की मलिनताओं को समाप्त करते हुए चलती है और अग्नि का एक गुण संघर्षशीलता भी है, अग्नि का उपासक भी जीवन संघर्ष में कभी पीछे नहीं हटता है।

२. अक्नोपनो भवति अग्नि का उपासक सांसारिक विषयों से अपना स्नेह नहीं जोड़ता क्योंकि वह इस बात को अपने विवेक द्वारा जान लेता है कि संसार के किसी भी भोग में तृप्ति नहीं है बल्कि संसार के समस्त भोग हमें क्षणिक सुख देकर सदा-सदा के लिए अपने लक्ष्य से बहुत दूर ले जाते हैं।

३. तपोवा अग्निः (श.प.३/४/३/२) अग्नि का उपासक अपने जीवन को तपस्वी बनाता है। वह अपने जीवन में जो भी संकल्प लेता है उसे पूरा किए बिना वह कभी भी, कहीं भी रुकता नहीं है बल्कि उसे प्राप्त करने के लिए निरन्तर कर्मशील बना रहता है। वह कर्मशीलता ही उसे समस्त पदार्थों की प्राप्ति कराती है। वह अग्नि का उपासक नहीं है जो आलसी बनके पड़ा रहता है।

४. अग्निर्वै पाप्मनोपहन्ता (श.प.२/३/३/१३) अग्नि का उपासक अपने ज्ञान-विज्ञान तथा विवेकशीलता से समस्त पापों का नाश करने में सफल होता है।

५. अयं वा अग्निः ब्रह्म च क्षत्रं च (श.प.६/२/३/१५) अग्नि के उपासक का जीवन में बस एक ही लक्ष्य होता है कि अधिक से अधिक ज्ञान और बल का संचय करे।

६. अग्निर्वै ब्रह्मणों वत्सः (जैमिनी.३/२/२३/१) अग्नि का उपासक अपने तप, विवेक, मुमुक्षुत्व भाव आदि गुणों तथा वेद प्रचार और संसार का उपकार करके उस प्रभु का अत्यन्त प्रिय बन जाता है।

७. अग्निर्वै स्वर्गस्य लोकस्य अधिपतिः (जैमिनी ०३/४२) अग्नि का उपासक अपने पुण्य कर्मों से स्वर्गलोक का अधिपति बनता है

क्योंकि वह इस तथ्य को आत्मसात् कर लेता है कि 'अग्निर्वै देवानां मुखम्' तथा 'स्वर्गकामो यजेत्' वह स्वर्ग की केवल कामना ही नहीं करता बल्कि अपने जीवन में अग्नियों को चयन करके स्वर्ग को प्राप्त होता है।

८.अग्निर्वा अबन्धुः(जैमिनी ०५/३/६/७) यह अग्नि का उपासक अपने को कहीं भी बन्धने नहीं देता, कहीं भी आसक्त नहीं होता, अनासक्त भाव से आगे ही आगे बढ़ता है। यही अनासक्ति उसे निष्काम कर्म के साथ जोड़ती है।

९.प्रजापतिरग्निः(श.प.६/२/१/२३) इस प्रकार अनासक्त भाव से आगे बढ़ता हुआ यह उपासक ही प्रजाओं का स्वामी बनता है। अपने जीवन को अग्निमय बनाकर यह उपासक उस परमात्मा का ही हो जाता है तथा वह आत्म यज्ञ का अधिकारी बन जाता है। कहते हैं कि एक बार राजा जनक ने भारी दक्षिणावाले यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसमें अनेक ब्रह्मज्ञानी ऋषि आमंत्रित थे। उन्होंने एक सहस्त्र गौवें जिनके सींग सोने से मढ़े हुए थे आगे करके कहा कि- हे ब्राह्मणों! आप में से जो ब्रह्मज्ञानी हो वह इन गौवों को ले जाए। महाराज जनक के ऐसा कहने पर किसी को भी गौवें हाँकने का साहस नहीं हुआ मगर महामना याज्ञवल्क्य जी ने अपने शिष्य से कहा, सामश्रवा गौवों को हाँककर ले चलो। याज्ञवल्क्य के ऐसा कहने पर वहाँ पर उपस्थित अन्य ब्रह्मज्ञानियों ने अपने बहुत से प्रश्न किए। जनक के होता अश्वल ने पूछा- हे याज्ञवक्य तुम्हें नमन है मगर यह बताओ कि जो कुछ वह सब है, मृत्यु का ग्रास हो जाता है, आत्मज्ञान यज्ञ का अनुष्ठान करने वाला यजमान किस उपाय से मृत्यु से छुटकारा पा सकता है? याज्ञवल्क्य जी बोले आत्मज्ञानरूपी यज्ञ के वाक्, चक्षु, प्राण और मन ये चार ऋत्विक् हैं, जीवात्मा यजमान है। इन चार वाक्, चक्षु, प्राण और मन ऋत्विजों द्वारा जब यज्ञ सम्पन्न हो जाता है तो आत्मा जन्म-मरण के बन्धन से छुटकारा पा लेता है। अग्नि का उपासक जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त हो जाता है।

– महर्षि दयानन्द धाम
महादेव, सुन्दरनगर–१७४४०१ (हिमाचलप्रदेश)

सत्यार्थप्रकाश पहेली– ५/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये– सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (चतुर्थ समुल्लास पर आधारित)– पुरस्का

१	ख	■	२	कृ	२	■	३	य ३		र ३
४ अ		स ४		ता ४	■	■	■	त्री ५	■	■
६	स	६	श ६	■	■	■	नि ७		७	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जिस देश में बाल्यावस्था में और अयोग्यों का विवाह होता है वह देश किसमें डूब जाता है?

२. जो सोलह और पच्चीस वर्ष की अवस्था में विवाह करे तो वह क्या कहलाता है?

३. किस रीति से विवाह उत्तम है?

४. कैसे विवाह में नित्य क्लेश ही रहता है?

५. बाल्यावस्था में विवाह करने से जितना पुरुष का नाश होता है उसमें अधिक किसका नाश होता है?

६. चाहे लड़का-लड़की मरण पर्यन्त कुमारे रहें, परन्तु कैसों का विवाह न होना चाहिये?

७. आठ, नौ और दशमें वर्ष में विवाह करना कैसा है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली– ३/१६ का सही उत्तर

१. पाँच	२. नित्य	३. दश	४. वेदाधीन
५. ईश्वरकृत	६. आर्षग्रन्थ	७. सब सत्य	

भूल सुधार– कृपया सत्यार्थप्रकाश पहेली ४/१६ में 'तृतीय समुल्लास पर आधारित' के स्थान पर 'चतुर्थ समुल्लास पर आधारित' पढ़ें।

"विस्तृत नियम पृष्ठ ३० पर पढ़ें। ५०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि– १५ जून २०१६

साहस को सलाम

वेद में माता को वीरसू कहा है। अर्थात् वह शूरवीर संतानों को जन्म देने वाली हो। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश में माता-पिता को यह निर्देश दिए हैं कि बालक को योग्य और वीर बनावें। आजकल कई बार हम देखते हैं की माताएँ आदि अकारण ही, किसी कार्य से संतान को विरत् रखने के लिए काल्पनिक हौए, किसी बहरूपिये अथवा भूत का डर दिखातीं हैं जिनके कारण बच्चे में डर के संस्कार पर जाते हैं। महर्षि दयानन्द इसका स्पष्ट निषेध करते हैं। माता-पिता का कर्तव्य है कि वे बालक को उत्तम शिक्षा, उत्तम व्यवहार तथा निडरता का उपदेश करें। इतिहास में माता मदालसा एवं सुभद्रा के उदाहरण हमारे समक्ष आते हैं जो कि वेद के आदेश पर चल वीरसू बनीं। आज भी अनेक बच्चे वीरता के ऐसे उदाहरण हमारे समक्ष उपस्थित कर जाते हैं कि उनकी वीरता पर गर्व तो होता ही है आश्चर्य भी होता है। ऐसी दो पुत्रियों के साहस की दास्तान इस बार आत्म निवेदन में आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

भोपाल की रीति कौन

कई बार हम अपने आसपास जब नजर डालते हैं तो अनेक अप्रिय घटनाएँ घटती दिखाई देती हैं। पर हम इनसे बच निकलने में ही अपना कल्याण समझते हैं क्योंकि हमें अपनी हानि का भय रहता है। ऐसे में जब एक किशोरी की निडरता और निर्भयता की दास्तान पढ़ते हैं तो अनायास मन में यह भाव आता है कि देश के सभी नागरिक अगर अन्याय के खिलाफ थोड़ा-सा भी साहस दिखायें तो अपराधों की संख्या काफी कम हो सकती है। इन पंक्तियों में हम ऐसी ही दो किशोरी बालिकाओं की बहादुरी का वर्णन करने जा रहे हैं जिससे अन्यों को भी प्रेरणा मिल सके।

नवाबों का शहर भोपाल भारतवर्ष में सुप्रसिद्ध है। इसी भोपाल शहर में 'भूमिका रेसीडेन्सी, कोलार रोड' के एक फ्लेट में दैनिक भास्कर में सीनियर मैनेजर श्री विकास पाटोदी अपने परिवार सहित रहते हैं। इनके परिवार में पत्नी श्वेता, बेटी रीति एवं छोटा बेटा युग है। मार्च का महीना अभी शुरू ही हुआ था, गर्मी ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया था। घर के वरिष्ठजनों के कार्य पर जाने के बाद फ्लेट्स में प्रायः सूनापन अलसाया सा फैला रहता है। रोज की तरह विकास पाटोदी अपने कार्यालय को निकल गए। लगभग दोपहर १.३० बजे श्वेता बेटे युग के साथ बाहर शॉपिंग इत्यादि के लिए निकल गईं। जाते-जाते १२ वर्षीय रीति को सावधान करके गई कि-'बेटा किसी के लिए दरवाजा मत खोलना।' आजकल शहरों में जिस तरह से अकेले फ्लेट्स व मकानों में वारदातें होने लगी हैं, ऐसे में ये निर्देश ध्यान में रखने ही चाहिए। रीति भोपाल के ही सैण्ट जोसफ को. एड विद्यालय में कक्षा ८ की छात्रा है। यह मेधावी बालिका समझदार तो है ही पर इतनी बहादुर भी होगी यह ३ मार्च, १६ को ही पता चला। मम्मी के जाने के बाद रीति अकेली अपने कार्य में व्यस्त हो गई। इतने में डोर बेल बजी। रीति ने जब पूछा कि कौन है, तब बाहर से लड़की की आवाज में जवाब आया कि एक पार्सल डिलीवरी करनी है। रीति ने उत्तर दिया कि आप बाद में आइएगा। तब कहा गया कि बेटा! बस अन्दर की सांकल को आधा खोलकर ले लो, मैं अन्दर नहीं आऊँगी, बाहर से ही पार्सल दे दूँगी और उसी प्रकार थोड़े से खुले दरवाजे में से आप हस्ताक्षर कर देना। रीति को यह निरापद लगा। उसने जब चैन डोर खोला तो लड़की वहाँ थी ही नहीं, वह तो वहाँ से चम्पत हो गई थी। इतने में ही इर्द गिर्द छुपे हुए, चेहरों पर रुमाल ढके तीन लड़कों में से एक ने खुले स्पेस में लकड़ी का बैट फँसा दिया। यह देख रीति ने भागकर एक कमरे में

जाकर कमरे को अन्दर से बन्द कर लिया। यह बिल्कुल स्वाभाविक भी था और ऐसी परिस्थिति में सामान्य तौर पर यही कहा जायेगा कि उसने बिल्कुल ठीक किया। रीति ने अन्दर से कुण्डी लगाकर अपने को सेफ तो कर लिया पर उसका दिमाग तीव्र गति से सक्रिय था। उसके कान बाहर की आवाज पर लगे हुए थे जिससे उसे यह संकेत मिल सके कि वे तीनों गुण्डे घर में घुसकर क्या कर रहे हैं। उसे अलमारी खोलने की आवाज आयी और रीति समझ गई कि ये गुण्डे सारा सामान व मम्मी के गहने लेकर चले जायेंगे। बस एक संकल्प उसके दिमाग में कौंधा कि पापा के परिश्रम से अर्जित अपने इस मूल्यवान सामान की रक्षा तो उसे करनी ही चाहिए और उसके साथ इन गुण्डों को भी सबक सिखाना चाहिए। उसने सोचा कि मैं पुलिस को सूचना दे दूँ। पर तभी उसे ध्यान आया कि अन्दर भागने के चक्कर में मोबाइल तो बाहर के कमरे में ही रह गया। रीति के सामने इस समय दो विकल्प थे या तो चुपचाप अन्दर रहकर अपनी जान बचाये या मोबाइल को लेकर पुलिस को सूचना देने का चांस ले जिसमें खतरा ही खतरा था। रीति ने अपने दूसरे फैसले पर अमल करने का निश्चय किया। उसने धीरे से अपने कमरे का दरवाजा खोला और दबे पाँव मोबाइल की ओर झपटी और मोबाइल को उठा लिया। मोबाइल लेकर नम्बर डायल करती हुई

कमरे की ओर भागी। ठीक यही समय था जब की-पेड की आवाज सुनकर गुण्डों का ध्यान रीति की ओर गया और वे चिल्लाये, भागो यह पुलिस को फोन कर रही है। भागते-भागते एक लड़के ने अपने हाथ में पकड़े चाकू से रीति पर वार करना चाहा जिसने अपनी बहादुरी से उनका सपना चकनाचूर कर दिया था। चेहरे को बचाने के लिए रीति ने अपना हाथ चेहरे के सामने कर लिया तो चाकू रीति के हाथ में एक कट लगाता हुआ निकल गया। पुलिस को नम्बर डायल कर दिया गया है यह सोचकर बदमाश भाग गए। एक क्षण रीति ने सोचा और बगल में जो उसकी मित्र रहती थी वह जल्दी से वहाँ चली गई। उसकी सहेली की माँ ने सबको सूचना दी। विकास पाटोदी के पुलिस को फोन करने पर पुलिस भी वहाँ अतिशीघ्र आ गई। इस प्रकार एक बहादुर बच्ची ने न केवल अपनी जान की रक्षा की वरन् उन बदमाशों को भी भागने पर मजबूर कर दिया।

भोपाल पुलिस, भोपाल का मीडिया, भोपाल के विद्यालय सर्वत्र इस बहादुर बच्ची की कहानी कुछ दिनों तक गूँजती रही।

अपने-अपने स्तर पर प्रोत्साहन देने के लिए इस साहसी बालिका को कई लोगों/संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत व सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया। आईजी, पुलिस भोपाल ने दस हजार रु. की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की। मध्यप्रदेश के गृहमंत्री श्री बाबूलाल गौर भी अपने को रोक नहीं सके और वह इस बहादुर बच्ची से मिलने उसके घर आये, उन्होंने भी उसे पाँच हजार रु. की नगद राशि व गिफ्ट पैक प्रदान किया। उधर जीटीवी मध्यप्रदेश चैनल ने रीति को बुलाकर उसका साक्षात्कार प्रसारित किया, शील्ड प्रदान

कर रीति को सम्मानित किया तथा Women Achievers Award से नवाजा। राज्य पुलिस की डी.आई.जी (अपराध शाखा) महिला पुलिस भी पीछे नहीं रही उन्होंने रीति को अपने यहाँ बुलाकर प्रशस्ति पत्र व शील्ड प्रदान की। सेन्ट जोसेफ कॉ एड विद्यालय के विद्यालय प्रबन्धन ने भी रीति को तीन हजार रु. की नगद राशि का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

हमें यहाँ यह लिखते हुए प्रसन्नता हो रही है कि यह बहादुर बच्ची न्यास के व्यवस्थापक श्री सुरेश जी पाटोदी की पौत्री है और हमें ही नहीं पूरे न्यास को रीति पर गर्व है और हम आशा करते हैं कि इन पंक्तियों को पढ़कर भारत के अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिलेगी।

तेलंगाना की शिवाम्पेट रुचिता

उसके हृदय में एक छेद था जिसकी दो वर्ष पूर्व सर्जरी हुयी थी, उसके साहस में कोई कमी नहीं थी। तेलंगाना के मेढ़क जिले की रहने वाली ८ वर्ष की रुचिता ने साहस और प्रत्युत्पन्नमति से युक्त ऐसा कारनामा दिखाया कि हर कोई दंग रह गया। २४ जुलाई २०१४ का दिन था। ग्रीष्मावकाश के पश्चात् विद्यालय खुल चुके थे। स्कूल बस में रुचिता अपने छोटे भाई तथा बहिन व अन्य बच्चों के साथ बैठी थी। बिना चौकीदार के रेलवे क्रासिंग पूरे देश में प्रतिवर्ष कितने एक्सीडेंट के कारक बनते हैं तथा कितनी जानों की हानि होती है, यह सभी जानते हैं। पर इस समस्या का कोई स्थायी समाधान अभी तक नहीं हो सका। सुबह के ६ बजकर २० मिनट हुए थे। रुचिता के काकतिया टेक्नो विद्यालय की स्कूल बस जब मसईपेट गाँव के निकट ऐसे ही एक मानव रहित क्रासिंग से गुजर रही थी तो अचानक रुक गयी। उस समय ट्रेक पर नांदेड-सिकंदराबाद जाने वाली ट्रेन आ रही थी जो ज्यादा दूर नहीं थी। जब यह दृश्य रुचिता ने देखा तो उसे समझने में देर न लगी कि कुछ ही सेकण्ड में ट्रेन बस को टक्कर मार देगी। उसने चिल्लाकर ड्राइवर का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा कि बस को सड़क के उस पार ले चले।

ड्राइवर पूरी तरह बदहवास हो चुका था वह बार-बार बस स्टार्ट कर रहा था परन्तु बस स्टार्ट ही नहीं हो रही थी, ऐसे में जब बस के अन्दर सभी किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए थे रुचिता ने शीघ्र निर्णय लिया और दो

बच्चों को बस की खिड़की से धक्का दे बाहर निकाल दिया। उसकी छोटी बहिन आगे-आगे बैठी थी उसे आवाज दी पर वह न उठ सकी। अंत में रुचिका स्वयं बस की खिड़की से कूद गयी और अगले ही सेकण्ड ट्रेन ने बस को भीषण टक्कर मार दी। यह सब चन्द सेकंडों के अंतराल में हो गया। इस भयंकर दुर्घटना में बस के ड्राइवर सहित २० बच्चे मारे गए। रुचिका ने अपनी प्रत्युत्पन्नमति व साहस के चलते दो बच्चों को बचा लिया हालांकि उसे यह मलाल आज भी है की वह अपनी छोटी बहिन को नहीं बचा सकी। जब उसे गीता चोपड़ा पुरस्कार जिसमें सम्मान सहित ४०००० रुपयों की प्रोत्साहन राशि भी मिली, तब उसे प्रसन्नता अवश्य थी परन्तु बहिन को न बचा पाने का दर्द भी उसके साथ था। सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से हम इन बच्चियों के साहस को नमन करते हैं।

– अशोक आर्य
चलभाष– ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

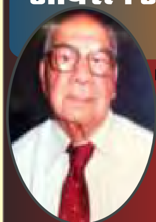

''सत्यार्थ-भूषण'' पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना अवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि प्रमाण-पत्र व ₹ ५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं है आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्वभर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले / अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹ ५१००, ₹ ११००, ₹ ७०० तथा ₹ ५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

नियम कि विस्तृत जानकारी हेतू कृपया इस पृष्ठ को देखें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष – न्यास

सेवा और संघर्ष से,
मिलती खुशी अपार।
मंजिल आकर चरण चूमती
गले लगाता यह संसार।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचाव

'हम आर्यसमाज जाना न छोड़ें क्योंकि इससे हमारी अपनी हानि होगी'

मनमोहन कुमार आर्य

(भाजपा सांसद स्वामी सुमेधानन्द का महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में उद्बोधन)

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि गुजरात राज्य के मौरवी जिले का टंकारा नामक ग्राम वा कस्बा है। प्रत्येक वर्ष शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ ऋषि बोधोत्सव मनाया जाता है। इस आयोजन में अन्य विद्वानों एवं ऋषिभक्तों के साथ सीकर से भाजपा सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती भी पधारे थे। ६ मार्च को उनका यज्ञशाला में प्रवचन हुआ। उसी प्रवचन में स्वामी जी द्वारा कहे गये विचारों को हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने ऋषि भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि- हम सभी टंकारा ऋषि दयानन्द जी के प्रति श्रद्धा के भाव लेकर आये हैं। स्वामीजी ने कहा कि वह सन् १९८१ में पहली बार प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री दयालु मुनि आर्य के भाई भयाम भाई से मिले थे। स्वामी सुमेधानन्द जी सन् १९८४ में संन्यास लेने से पूर्व वह ब्रह्मचारी के रूप में रहे। स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थों के प्रचार का उन्हें अवसर मिला और इसी बीच उन्होंने गुजराती सीखी। स्वामीजी ने कहा कि हम सबको छोड़ दें परन्तु आर्यसमाज को कभी न छोड़ें क्योंकि आर्यसमाज न जाने से हमारे व हमारे परिवार की ही हानि होती है, आर्यसमाज की नहीं। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में जाने से हमें संस्कार व ऊर्जा मिलती है। स्वामी जी ने बताया कि उन्होंने स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से संन्यास ग्रहण किया था। उन्होंने कहा कि हम आर्य समाजियों में वैदिक नियमों व परम्पराओं की उपेक्षा होने लगी है। समाज में माताओं व बहनों को यज्ञ करते समय जो यज्ञोपवीत दिया जाता है, ऐसा देखने में आता है कि उसे वह कुछ समय बाद उतार कर अलग रख देती हैं। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य जो संकल्प लेता है, उसका जीवन में महत्व होता है। उन्होंने बताया कि एक बार सीकर से रेल यात्रा आरम्भ करते समय एक घटना घटी। एक बूढ़ी स्त्री घर से झगड़ कर आये एक युवक को घर ले जाने का आग्रह कर रही थी परन्तु जब वह नहीं माना तो उसने उसे विवाह में की गई प्रतिज्ञाओं के बारे में बताया। वह इसे सुनकर और कुछ विचारकर घर जाने के लिए सहमत हो गया। स्वामीजी ने कहा कि यज्ञोपवीत विद्या का चिह्न व द्विज होने के साथ हमें हमारे संकल्प की याद भी दिलाता है। उन्होंने कहा कि ऋषि-ऋण तब उतरेगा जब हम ऋषियों के पथ पर चलेंगे। स्वामीजी के अनुसार सेवा का फल आत्म सन्तुष्टि होता है। यदि आप गरीबों को वस्त्र देंगे तो आपको आत्म सन्तोष होगा। भूखे को भोजन कराने से भी आत्मिक सुख मिलता है।

स्वामीजी ने आर्यसमाज के १० नियमों का उल्लेख कर पहले नियम के शब्दों को दोहराया कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है।' उन्होंने कहा कि इस नियम में निहित गहरे ज्ञान व रहस्य पर शोधार्थी शोध कर शोध उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सभी वनस्पतियों व अन्न के पदार्थों के बीज बनाने वाला परमेश्वर है। अपने सीकर में दिए एक प्रवचन का उल्लेख कर उन्होंने बताया कि प्रश्नोत्तर में उन्होंने एक नास्तिक विचारों के युवा को बताया था कि मनुष्य प्रायः सैकेण्ड-हैण्ड वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि हम सर्दियों में गर्म कपड़े पहनते हैं। यह ऊनी कपड़े इस कारण सैकेण्ड-हैण्ड होते हैं कि फर्स्ट-हैण्ड तो ऊन होती है, जिससे यह बनते हैं और जिसे प्रयोग से पूर्व भेड़ अपने शरीर पर धारण करती है। रेशमी साड़ी का

उल्लेख कर स्वामी जी ने कहा कि रेशम एक कीड़े के थूक से बनता है। यह कीड़ा शहतूत की पत्तियों को खाकर उससे रेशम का निर्माण करता है। रेशम की साड़ी सेकेण्ड-हैण्ड इस कारण से है कि शहतूत, कीड़े और रेशम को ईश्वर बनाता है। रेशम का प्रथम प्रयोग व उपयोग कीड़े के द्वारा होने से यह साड़ी बनने पर प्रथम न रहकर द्वितीय बार उपयोग में लाया गया है। स्वामी जी ने चिकनगुनिया रोग की चर्चा कर कहा कि एक बार इस रोग से ग्रस्त एक रोगी को रक्त की आवश्यकता पड़ी। वह ईश्वर को मानता नहीं था। उसने रक्त दानियों के लिए विज्ञापन कराये। उस व्यक्ति ने बताया कि वह रक्तदान के कैम्प लगवाता है। स्वामीजी ने

उससे कहा कि यदि तुम ईश्वर को नहीं मानते तो फिर ईश्वर की वस्तुओं का प्रयोग क्यों करते हो। रक्तदान का खून तो ईश्वर का बनाया हुआ है इसलिए तुम्हें ईश्वर का उपकृत होना चाहिये। उन्होंने कहा कि नास्तिक लोग कान को घुमा कर पकड़ते हैं और हम सीधा पकड़ते हैं। ईश्वर मनुष्य के शरीर में अलग-अलग ग्रुपों का खून बनाता है। आप जहाँ देखेंगे आपको वहाँ ईश्वर का स्वरूप, कृति व कार्य दृष्टिगोचर होगा। मनुष्यों द्वारा ईश्वर का उपकार न मानना कृतघ्नता है। कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि मनुष्य को प्रकृति से जो ताँबा, लोहा व रबर आदि वस्तुएँ प्राप्त होती हैं यह सब ईश्वर की कृपा व देनें हैं।

स्वामी सुमेधानन्द जी ने आगे कहा कि यदि आप आनन्द, सुख व शान्ति चाहते हैं तो इनकी प्राप्ति ईश्वर से होगी। वेदाध्ययन सहित ईश्वर, आत्मा व संसार के चिन्तन करने से हमारी गुत्थियाँ सुलझेंगी। हम पर स्वामी दयानन्द, माता-पिता व ऋषियों का ऋण है। हमें इन ऋणों को उतारना है। उन्होंने कहा कि पंजाब की इन दिनों दयनीय अवस्था है। पहले पंजाब अन्य राज्यों की तुलना में प्रथम स्थान पर था परन्तु आने वाले २० साल बाद यहाँ युवा देखने को नहीं मिलेंगे। उन्होंने नशीले पदार्थों के सेवन से सम्बन्धित एक विद्वान् श्री पालीवाल जी का उल्लेख कर कहा कि यहाँ के युवा नशाखोर बन रहे हैं और हीरोइन जैसे मादक एवं बुद्धिनाशक व शरीर के लिए हानिकारक पदार्थ का सेवन करते हैं। विद्वान् संन्यासी ने कहा कि हमने स्वामी दयानन्द जी की बात नहीं मानी। मत-पन्थ तथा सम्प्रदायों के कारण देश के लोगों में परस्पर मतभेद हैं। जातिवाद का दुष्परिणाम हरियाणा राज्य में पिछले दिनों देखने को मिला। जातिवाद के दुष्प्रभाव से महर्षि दयानन्द ने हमें सावधान किया था परन्तु हमने उनकी सलाह को नहीं माना। स्वामी जी ने शिव, पार्वती व किसान से जुड़ा एक पौराणिक आख्यान प्रस्तुत किया।

शिवजी ने कई वर्षों तक वर्षा न करने की घोषणा की थी। कई वर्ष बाद जब वह धरती पर आये तो देखा कि एक किसान हल चला रहा है। शिवजी ने उससे पूछा कि क्या तुम्हें शिवजी की घोषणा का ज्ञान नहीं है। अभी कई वर्षों तक वर्षा नहीं होगी। किसान ने कहा कि मुझे शिवजी की घोषणा का पता है लेकिन मैं हल इसलिए चला रहा हूँ कि मेरा हल चलाने का अभ्यास बना रहे, छूट न जाये। किसान के उत्तर से शिवजी को लगा कि कहीं ऐसा न हो कि वह

वर्षा कराने के लिए आवश्यक क्रिया शंख बजाना भूल जायें, अतः उन्होंने विचार किया कि मैं भी शंख को बजा कर देख लूँ, कहीं ऐसा न हो कि अभ्यास छूटने से यह मुझसे बजे ही न। उन्होंने शंख बजाया तो वह बज गया और वर्षा होने लगी जिससे उस किसान को लाभ हो गया और उसकी भरपूर फसल हुई।

स्वामी जी ने कहा कि हमें सन्ध्या, यज्ञ, पितृयज्ञ आदि सभी कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक पालन करना चाहिये जिससे हम इनके लाभों से वंचित न हों। लोकसभा में कांग्रेस नेता श्री खडगे के आर्यों के विरुद्ध दिये गये अनुचित बयान की भी आपने आलोचना की।

हमें इस अवसर पर टंकारा में स्वामीजी के साथ कुछ समय व्यतीत करने का अवसर मिला। स्वामीजी ने यह भी बताया कि राजस्थान सरकार ने पुष्कर की पहाड़ियों में स्वामी दयानन्द जी का एक भव्य स्मारक बनाने का निश्चय किया है। यह स्मारक जल्दी बनकर तैयार हो जायेगा। महर्षि दयानन्द का यह स्मारक भरतवंशी सम्राट वीर पृथिवीराज चौहान के समान होगा। इसके अन्तर्गत पुष्कर के एक पर्वत शिखर पर महर्षि दयानन्द की विशाल मूर्ति होगी तथा उसी बृहत् परिसर में उनके जीवन का पूर्ण वृतान्त चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया जायेगा। यज्ञशाला, कार्यालय व निवास की सुविधा भी वहाँ उपलब्ध होगी। इस कार्य के लिए राजस्थान सरकार, मुख्यतः वहाँ की मुख्यमंत्री श्रीमति विजयाराजे सिंधिया धन्यवाद एवं बधाई की पात्र हैं। इस कार्य के लिए समूचा आर्यसमाज भी राजस्थान सरकार और स्वामी सुमेधानन्द जी का ऋणी होगा। इति।

१९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के

बेहद रुचिकर एवं समाज को एक विशिष्ट दिशा देने वाला केन्द्र नवलखा महल स्वामी दयानन्द जी की अद्भुत देन है। आज की युवा पीढ़ी को सफल मार्गदर्शन हेतु बेहद सफल प्रयास है यह चित्रदीर्घा। मैं यहाँ आकर ये सोचने पर मजबूर हो गया हूँ कि आज तक मैं केवल अन्धकार में ही भटक रहा था आज थोड़ा प्रकाश मिला है। **- टी. आर. साहू, छत्तीसगढ़**

स्वामी दयानन्द जी के योगदान की प्रदर्शनी को देखकर निश्चित मैं अपने जीवन में बहुत से द्वेष दूर कर पाऊँगा। **- जे. एस. राठौड़, वडोदरा**

डा. रवीन्द्र अग्निहोत्री

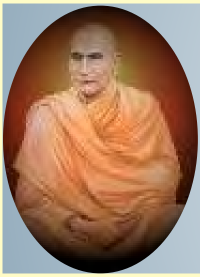

स्वामी श्रद्धानंद और महात्मा गाँधी

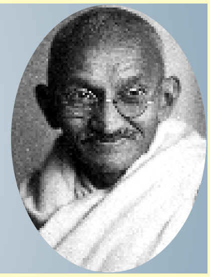

हाल ही में गुजरात में पटवारी (जिसे वहाँ तलाटी कहते हैं) पद के लिए आयोजित परीक्षा में एक प्रश्न पूछा गया, 'बापू को पहली बार महात्मा की उपाधि किसने दी ?' एक परीक्षार्थी (संध्या मारू) ने गुरुदेव टैगोर का नाम लिखा (प्रायः लोग यही नाम लेते हैं), पर परीक्षक की दृष्टि में सही उत्तर था सौराष्ट्र का एक गुमनाम पत्रकार। अतः उसने 'निगेटिव मार्किंग' के अंतर्गत अंक काट लिए। परीक्षार्थी यह विषय हाई कोर्ट में ले गई और मामला वहाँ विचाराधीन है। (दैनिक जागरण १६ फरवरी २०१६, पृ. २)

'गुमनाम' लोगों के बारे में तो निश्चयपूर्वक कुछ कहना संभव नहीं, पर 'नाम' वाले लोगों में पहला नाम टैगोर का नहीं, स्वामी श्रद्धानन्द का है। राष्ट्रीय जीवन में आर्य समाज से सम्बन्धित महापुरुषों के योगदान की उपेक्षा करने वालों को यह तथ्य समझने के लिए इतिहास के कुछ पृष्ठ पलटने होंगे। १८ वर्ष की आयु में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गाँधी जी बैरिस्टरी की पढ़ाई करने इंग्लैण्ड चले गए। तीन वर्ष बाद वे भारत वापस आए। लगभग दो वर्ष मुम्बई और राजकोट में वकालत करने के उपरान्त वे २४ वर्ष की आयु में (सन् १८६३ में) दक्षिण अफ्रीका चले गए जहाँ काफी संख्या में भारतीय रहते थें और उनमें से अधिकतर सम्पन्न व्यापारी थे। गाँधी जी वहाँ लगभग बीस वर्ष (सन् १६१५ तक) रहे। यहीं रहते हुए उनके जीवन में ऐसे परिवर्तन आए जिनके कारण वे एक सामान्य बैरिस्टर से कहीं ऊपर उठकर एक नेता बन गए, कोई साधारण नेता नहीं, बल्कि ऐसे सच्चे नेता बन गए जिसने अपने लिए आधुनिक नेताओं वाली सुविधाएँ जुटाने के बजाय समाज के दबे-कुचले आम आदमी के जीवन को बदल देने वाली सुविधाएँ आम आदमी को ही उपलब्ध कराने में अपना सारा जीवन लगा दिया। भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने की योजना गाँधी जी ने यहीं रहते हुए बनाई। गाँधी जी जिस प्रकार की स्वतन्त्रता देश के लिए चाहते थे, उसकी रूपरेखा स्पष्ट करने वाली उनकी पुस्तक 'हिंद स्वराज' की रचना भी यहीं हुई जो १६०६ में प्रकाशित हुई। यहीं उन्होंने फीनिक्स आश्रम की स्थापना की जिसमें रहने वाले लोग अपने

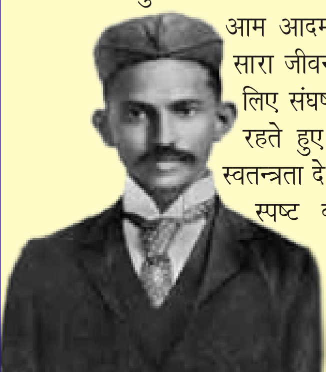

सभी काम स्वयं करते थे, फिर वह चाहे खेती का काम हो, या जूता गाँठने का या मल उठाने का, और यहीं टालस्टाय आश्रम बनाया जिसमें उक्त बातों के साथ ही शिक्षा सम्बन्धी वे प्रयोग किए जिनके आधार पर बाद में बुनियादी शिक्षा (Basic Education) की योजना बनाई गई।

दक्षिण अफ्रीका में उस समय अंग्रेजों का ही शासन था जो वहाँ प्रवासी भारतीयों के साथ तरह-तरह के भेदभावपूर्ण अपमानजनक व्यवहार करते थे। बैरिस्टर होने के बावजूद गाँधी जी को भी ऐसे अपमान सहने पड़े। डरबन कोर्ट में एक मुकदमे की पैरवी के लिए बैरिस्टर के रूप में उपस्थित गाँधी जी से मजिस्ट्रेट का 'पगड़ी' उतारने के लिए कहना (आज तो हम लोग अंग्रेजी संस्कृति इतनी अपना चुके हैं कि अब शायद पगड़ी का महत्व ही न समझ पाएँ), या रेल में प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद उन्हें रेल से उतार देना और सामान प्लेटफार्म पर फेंक देना जैसे दुर्व्यवहार से तो हम परिचित हैं ही। वहाँ की सरकार ने भारतीयों को अपमानित करने के लिए उन पर अनेक तरह के टैक्स लगाए और अनेक कानून बनाए जिनमें हर भारतीय को अनिवार्यतया अपने फिंगर प्रिंट रजिस्टर कराना भी शामिल था।

दक्षिण अफ्रीका के ऐसे माहौल में गाँधी जी के राजनीतिक जीवन की शुरुआत हुई। उन्होंने इस प्रकार के टैक्सों और कानूनों का 'अहिंसात्मक' ढंग से विरोध करने के लिए भारत की एक पुरानी परम्परा को अस्त्र बनाया जिसे यहाँ उन्होंने 'सत्याग्रह' का नाम दिया। उनके प्रयासों से प्रवासी भारतीयों में स्वाभिमान जागा, वे संगठित हुए, और लगभग आठ वर्ष के संघर्ष के बाद गाँधी जी का यह प्रयोग सफल हुआ। दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने गाँधी जी से समझौता किया, १३ प्रकार के टैक्स समाप्त किए, और फिंगर प्रिंट की जगह आवास सम्बन्धी प्रमाणपत्र पर ही अंगूठे के निशान को पर्याप्त मान लिया। इस सफलता ने एक ओर तो गाँधी जी को आत्मविश्वास से भर दिया और दूसरी ओर उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैला दी। भारत में भी उनकी यशः सुरभि राजनीतिक वातावरण को महकाने लगी।

जब यह 'सत्याग्रह आन्दोलन' दक्षिण अफ्रीका में चल रहा था, तब इस कार्य के लिए अपेक्षित आर्थिक सहयोग जुटाने के प्रयास

वहाँ तो किए ही जा रहे थे, भारत में भी गोपाल कृष्ण गोखले, सी. एफ. एंड्रयूज (Charles Freer Andrews) (गाँधी जी उनके सेवा भाव और परोपकारी स्वभाव के कारण उनके नाम के प्रारम्भिक अक्षरों का विस्तार Christ's Faithful Apostle के रूप में करते थे , और बाद में उन्हें 'दीनबंधु' कहने लगे) जैसे तत्कालीन नेता चन्दा इकट्ठा करने में जुटे थे। इस कार्य में उन्हें विशेष सहयोग उस समय के एक और बड़े नेता स्वामी श्रद्धानन्द से एवं उनके द्वारा सन् १६०२ में स्थापित शिक्षा की प्रसिद्ध संस्था गुरुकुल काँगड़ी (हरिद्वार) के शिक्षकों और विद्यार्थियों से मिला।

जो पाठक गुरुकुल कांगड़ी और स्वामी श्रद्धानंद की 'विशिष्टताओं' से परिचित नहीं, उनकी जानकारी के लिए यह बताना आवश्यक है कि यह वह संस्था है जिसके बारे में ब्रिटेन के पूर्व प्रधान मंत्री 'रैम्जे मैक्डनाल्ड' (जो ब्रिटेन में लेबर पार्टी के प्रथम प्रधानमंत्री थे) ने कहा था, 'मैकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयोग (एक्सपेरिमेंट) हुआ, वह गुरुकुल है।' संयुक्त प्रांत (वर्तमान उ. प्र.) के तत्कालीन गवर्नर 'सर जेम्स मेस्टन' ने गुरुकुल की कार्यप्रणाली देखने के बाद टिप्पणी की, 'आदर्श विश्वविद्यालय की मेरी यही कल्पना है।' और स्वामी श्रद्धानंद- ये वे ही महापुरुष हैं जो पेशे से तो वकील थे, पर उस समय कांग्रेस के भी एक बड़े नेता थे, आयु में गाँधी जी से १२ वर्ष बड़े थे, रौलेट एक्ट के विरोध में ३० मार्च १६१६ को चाँदनी चौक, दिल्ली में निकले जुलूस का (जो इसी एक्ट के अंतर्गत प्रतिबंधित था) नेतृत्व उन्होंने ने ही किया था, और अंग्रेजों की संगीनों के सामने अपना सीना तानकर कहा था, 'ले, भोंक दे संगीन', पर जिनकी भव्य आकृति, रोबीली आवाज, और अदम्य साहस को देखकर सैनिक डर कर पीछे हट गए थे। इतना ही नहीं, जिन्होंने मुस्लिम समुदाय के आमंत्रण पर ४ अप्रैल १६१६ को दिल्ली की जामा मस्जिद में 'वेद मन्त्र' पढ़ कर व्याख्यान दिया था (जी हाँ, जामा मस्जिद में वेद मन्त्र पढ़कर व्याख्यान, यह भारत का ही नहीं, विश्व के इतिहास में अपनी तरह का एकमात्र उदाहरण है), जिनके बारे में पूर्व ब्रिटिश प्रधान मंत्री रैम्जे मैक्डनाल्ड ने कहा था, 'वर्तमान काल का कोई कलाकार प्रभु ईसा की मूर्ति बनाने के लिए यदि कोई सजीव मॉडल चाहे, तो मैं इस भव्य मूर्ति (स्वामी श्रद्धानंद) की ओर इशारा करूँगा।'

पर श्रद्धानंद नाम तो उनका तब पड़ा जब १२ अप्रैल १६१७ को उन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया। जिस समय की हम बात कर रहे हैं, उस समय उनका नाम 'मुंशीराम' था। वे अपने परिवार का त्याग कर चुके थे, 'वानप्रस्थी' का जीवन बिता रहे थे और अपना नाम 'मुंशीराम जिज्ञासु' लिखते थे, पर लोग उनके त्यागपूर्ण और परोपकार में डूबे जीवन को देखकर उन्हें सम्मान से 'महात्मा मुंशीराम' कहते थे।

दक्षिण अफ्रीका के 'सत्याग्रह आन्दोलन' की सहायतार्थ भारत में चंदा इकट्ठा करने का प्रयास करने वाले दीनबंधु सी. एफ. एंड्रयूज और गोपाल कृष्ण गोखले ने अपने मित्र महात्मा मुंशीराम को अपने काम में सहयोगी बनाया। मुंशीराम जी ने

गाँधी जी के काम का महत्व एवं इस आन्दोलन के लिए आर्थिक सहयोग देने की आवश्यकता अपने गुरुकुल के विद्यार्थियों, शिक्षकों को समझाई। सबने अपने भोजन में कमी करके, दूध-घी बंद करके, तथा हरिद्वार में बन रहे दूधिया बाँध पर मजदूरी करके एक हजार पाँच सौ रुपये इकट्ठे किए जो मुंशीराम जी ने गोखले जी के पास भेज दिए। गोखले जी के पास यह राशि उस समय पहुँची जब वे हताश हो गहरी चिन्ता में डूबे हुए थे। कहते हैं यह राशि मिलने पर गोखले जी प्रसन्नता में कुर्सी से उछल पड़े और बोले कि यह पन्द्रह सौ नहीं, पन्द्रह हजार से भी अधिक कीमती हैं। उन्होंने २७ नवम्बर, १६१३ को महात्मा मुंशीराम जी को दिल्ली से हिंदी में अपने हाथ से पत्र लिखा जिसमें गुरुकुल के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की भावना और त्याग की भूरि-भूरि प्रशंसा की, इसे देशभक्तिपूर्ण कार्य बताया, भारत माता के प्रति कर्तव्यपालन बताया और देश के युवकों एवं वृद्धों के समक्ष एक आदर्श उदाहरण बताया।

उन्होंने और श्री एंड्रयूज ने गाँधी जी को गुरुकुल के लोगों के इस त्याग से अवगत कराया। अतः गाँधी जी ने मुंशीराम जी को नैटाल, दक्षिण अफ्रीका से २७ मार्च १६१४ को पहला पत्र अंग्रेजी में लिखा (१) । पत्र के प्रारम्भिक अंश का हिंदी अनुवाद इस प्रकार है :

'प्रिय महात्मा जी,

मि. एंड्रयूज ने आपके नाम और काम का मुझे परिचय दिया है। मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मैं किसी अजनबी को पत्र नहीं लिख रहा। इसलिए आशा है कि आप मुझे 'महात्मा जी' लिखने के

लिए क्षमा करेंगे। मैं और मि. एंड्रयूज आपकी और आपके काम की चर्चा करते हुए आपके लिए इसी शब्द का प्रयोग करते हैं...' इस प्रकार शुरू हुए पत्र-व्यवहार के माध्यम से गाँधी जी की मुंशीराम जी से निकटता बढ़ती गई। गाँधी जी ने बाद में अपने पत्र 'यंग इंडिया' में स्वामी श्रद्धानंद जी के संस्मरणों में उनके पहले पत्र की चर्चा करते हुए लिखा, 'स्वामी जी ने मुझे जो पत्र भेजा वह हिन्दी में था। उन्होंने मुझे 'मेरे प्रिय भाई' कहकर संबोधित किया था। इस बात ने मुझे मुंशीराम का प्रेमी बना दिया (२)। गाँधी जी ने जब भारत वापस आने और स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन करने की योजना बनाई तो पहले अपने आश्रम के विद्यार्थियों को भारत भेजने की व्यवस्था की। अहमदाबाद में तब तक उस आश्रम की स्थापना का निश्चय नहीं हो पाया था जिसे बाद में 'सत्याग्रह आश्रम' कहा गया। इसलिए गाँधी जी ने सी. एफ. एंड्रयूज से ऐसा 'स्थान' खोजने के लिए कहा जहाँ विद्यार्थी रह सकें और उनका अध्ययन भी जारी रह सके। श्री एंड्रयूज ने इसके लिए दो स्थानों का चयन किया- गुरुकुल कांगड़ी और शांतिनिकेतन। सबसे पहले ये विद्यार्थी सन् १६१४ में मगनलाल गाँधी के साथ गुरुकुल आ गए और लगभग एक वर्ष वहाँ रहने के बाद कुछ समय शांतिनिकेतन में रहे। गाँधी जी की अनुपस्थिति में श्री सी. एफ. एंड्रयूज ही इनकी व्यवस्था संभाल रहे थे ।

अगले वर्ष अर्थात् १६१५ के प्रारम्भ में गाँधी जी भारत आए। काठियावाड़ में अपने परिजनों के साथ कुछ समय बिताने के बाद उन्होंने महात्मा मुंशीराम जी को ८ फरवरी १६१५ को हिंदी में पत्र लिखकर उनसे मिलने की इच्छा जताई (३) :

' ....मेरे बालकों के लिए जो परिश्रम आपने उठाया और जो प्यार बतलाया उस वास्ते आपका उपकार मानने को मैंने भाई एंड्रयूज को लिखा था, लेकिन आपके चरणों में शीश झुकाने को मेरी उम्मेद है। इसलिए बिना आमंत्रण आने का भी मेरा फरज बनता है। मैं बोलपुर (शांतिनिकेतन) पीछे फिरूँ उससे पहले आपकी सेवा में हाजिर होने की मुराद रखता हूँ ......'

पर गाँधी जी के विद्यार्थी अब शांतिनिकेतन में थे। अतः उन्होंने पहले वहाँ जाने का निश्चय किया। अभी तक गाँधी जी का गुरुदेव टैगोर से कोई सीधा संपर्क नहीं हुआ था, श्री एंड्रयूज ही उनके सहयोगी-मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे थें। अतः श्री

एन्ड्रयूज ने गुरुदेव टैगोर को सूचना दी कि १७ फरवरी को गाँधी जी पत्नी कस्तूरबा सहित शांतिनिकेतन पहुँचेंगे। गुरुदेव टैगोर शांतिनिकेतन में ही थे, जहाँ उन्हें यह सूचना यथासमय मिल गई, पर शांतिनिकेतन में गाँधी जी का स्वागत करने के बजाय वे बिना किसी को कुछ बताए चुपचाप कलकत्ता चले गए। उन्होंने ऐसा क्यों किया- इसका कोई स्पष्टीकरण न तब दिया न बाद में दिया। उनकी जीवनी लिखने वाले लेखक-द्वय सुश्री कृष्णा दत्ता और एंड्रयू रोबिन्सन ने गुरुदेव के इस व्यवहार पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए लिखा है कि ऐसा लगता है कि गुरुदेव ने जानबूझकर गाँधी जी की उपेक्षा की (४) ।

इस प्रकार शांतिनिकेतन की पहली यात्रा में गाँधी जी की गुरुदेव से भेंट तक नहीं हो सकी (५)। इतना ही नहीं, गुरुदेव ने कलकत्ता से श्री एंड्रयूज को १८ फरवरी १६१५ को जो पत्र लिखा, उसमें भी गांधी जी को 'मिस्टर' लिखा (६) पर बाद में जब यह पत्र प्रकाशित करने का अवसर आया तब श्री एंड्रयूज ने अपने हाथ से मिस्टर काटकर 'महात्मा' लिख दिया (७) ।

संयोग से १६ फरवरी १६१५ को गाँधी जी के राजनीतिक गुरु श्री गोपालकृष्ण गोखले का स्वर्गवास हो गया। यह समाचार मिलते ही गाँधी जी २० फरवरी को पुणे चले आए। वहाँ शोकसभा ३ मार्च १६१५ को आयोजित की गई। इसमें भाग लेने के बाद गाँधी जी गुरुदेव टैगोर से मिलने ६ मार्च १६१५ को बोलपुर (शान्तिनिकेतन) पुनः गए। काका कालेलकर ने इस भेंट का वर्णन किया है, पर उसमें 'महात्मा' शब्द का कोई उल्लेख नहीं है। उनके अनुसार गाँधी जी के शांतिनिकेतन पहुँचने के बाद भी गुरुदेव अपने कक्ष में ही सोफे पर बैठे रहे। गाँधी जी ने जब कक्ष में प्रवेश किया तो वे सोफे से उठे और गाँधी जी को सोफे पर ही बैठने का संकेत किया, पर गाँधी जी सोफे के बजाय नीचे बिछे कालीन पर बैठ गए। फिर गुरुदेव भी नीचे कालीन पर बैठे।

गाँधी जी और टैगोर की बातचीत उसी अंग्रेजी में हुई जिससे मुक्ति पाने के लिए गाँधी जी आजीवन लालायित रहे। कुछ दिन शांतिनिकेतन में ठहरकर गाँधी जी ने वहाँ की व्यवस्था का अध्ययन किया। कई बातें उन्हें पसंद नहीं आईं। जैसे- वहाँ सभी काम नौकरों से कराया जाता था। वहाँ शाकाहारी और मांसाहारी भोजन एक साथ बनता था और एक साथ ही परोसा जाता था। बाद में गाँधी जी ने सुझाव दिया कि नौकरों को हटा देना चाहिए ताकि विद्यार्थी अपने सारे काम स्वयं करें। गुरुदेव गाँधी जी के विचारों से पूर्णतया सहमत तो नहीं थे, फिर भी उन्होंने उस दिन (१० मार्च को) नौकरों को छुट्टी दे दी और आगे से १० मार्च को शांतिनिकेतन में 'गाँधी दिवस' मनाने की घोषणा भी कर दी ।

लगभग एक महीने बाद ८ अप्रैल १६१५ को गाँधी जी गुरुकुल कांगड़ी पहुँचे। उस वर्ष हरिद्वार में कुम्भ भी था। गुरुकुल में आने पर आगे बढ़कर महात्मा मुंशीराम जी ने गाँधी जी का स्वागत किया, और गाँधी जी ने अपनी श्रद्धावश उनके चरण छूकर नमस्कार किया। यही वह पावन क्षण था जब मुंशीराम जी

ने भी गाँधी जी को 'महात्मा जी' कहकर संबोधित किया और गले से लगा लिया। एक महापुरुष ने जब दूसरे महापुरुष की साधना का सम्मान करते हुए उन्हें 'महात्मा' की पदवी दी तो मानों सारा वातावरण धन्य हो उठा। और बाद में यही सम्मान सूचक शब्द देश में ही नहीं, पूरे विश्व में उनकी पहचान बन गया। मौखिक रूप से कहे गए इस संबोधन को गुरुकुल के शिक्षकों, विद्यार्थियों ने अपने उस अभिनन्दन पत्र में स्थायी रूप प्रदान कर दिया जो इस अवसर पर उन्होंने तैयार किया और गाँधी जी को सादर भेंट किया। इसमें उन्होंने गाँधी जी को 'महात्मा जी' कहकर ही संबोधित किया। गुरुकुल में सारा वार्तालाप हिंदी में ही हुआ। अभिनन्दन पत्र स्वीकार करते हुए गाँधी जी ने हिंदी में भाषण देते हुए कहा :

'मैं हरिद्वार केवल महात्मा जी के दर्शनों के लिए आया हूँ। मैं उनके प्रेम के लिए कृतज्ञ हूँ। मि. एंड्रयूज ने मुझको भारत में अवश्य मिलने योग्य जिन तीन महापुरुषों का नाम बतलाया था, उनमें महात्मा जी एक हैं......मुझे अभिमान है कि महात्मा जी मुझको 'भाई' कहकर पुकारते हैं। मैं अपने में किसी को शिक्षा देने की योग्यता नहीं समझता, किन्तु महात्मा जी जैसे देश के सेवक से मैं स्वयं शिक्षा लेने का अभिलाषी हूँ ....'

गुरुकुल कांगड़ी की यह यात्रा गाँधी जी के लिए अविस्मरणीय बन गई। बाद में जब उन्होंने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' लिखी, तो उसमें इस यात्रा का उल्लेख करते हुए लिखा, 'जब मैं पहाड़ से दीखने वाले महात्मा मुंशीराम जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया, तो मुझे वहाँ बड़ी शांति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शांति के बीच का भेद स्पष्ट दिखाई देता था। महात्मा जी ने अपने प्रेम से मुझे नहला दिया। ब्रह्मचारी (गुरुकुल के विद्यार्थियों को 'ब्रह्मचारी' कहा जाता था) मेरे पास से हटते ही न थे...... यद्यपि हमें अपने बीच कुछ मतभेद का अनुभव हुआ, फिर भी हम परस्पर स्नेह की गाँठ में बंध गए......मुझे गुरुकुल छोड़ते हुए बहुत दुःख हुआ।'

गुरुकुल कांगड़ी में गाँधी जी के आगमन, उनके अभिनन्दन, 'महात्मा' संबोधन, आदि के समाचार तत्कालीन समाचारपत्रों में भी छपे। गाँधी जी ने कुल चार बार शांतिनिकेतन की यात्रा की और शुरू की दो यात्राओं को छोड़ बाद की दो यात्राओं में से किसी यात्रा में गुरुदेव टैगोर ने भी गाँधी जी को 'महात्मा' कहकर संबोधित किया होगा, पर उसका गुरुकुल कांगड़ी के अभिनंदन पत्र जैसा कोई 'रिकार्ड' उपलब्ध नहीं। हाँ, यह निश्चित है कि बाद में वे गाँधी जी को महात्मा जी कहने लगे थे। गुरुकुल कांगड़ी में भी गाँधी जी स्वामी श्रद्धानंद के जीवनकाल में दो बार और उनके शहीद होने के लगभग चार महीने बाद १६ मार्च १९२७ को दीक्षांत भाषण देने आए।

इस प्रकार भारत में गाँधी जी को सबसे पहली बार 'महात्मा' कहकर संबोधित करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे स्वामी श्रद्धानंद (महात्मा मुंशीराम), और स्थान था गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार)। साथ ही उसे अपना समर्थन देकर संपुष्ट करने और लोकप्रिय बनाने वाले थे नोबल पुरस्कार प्राप्त गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर। इन दोनों महापुरुषों ने गाँधी जी के प्रति जो सम्मान व्यक्त किया उसी का परिणाम था कि कालान्तर में 'महात्मा' संबोधन गाँधी जी के नाम का पर्याय बन गया।

सन्दर्भ :

(१) Dear Mahatma ji
Mr. Andrews has familiarized your name and your work to me. I feel I am writing to no stranger. I hope therefore that you will pardon me for addressing you by the title which both Mr. Andrews and I have used in discussing you and your work ....
[The Collected Works of Mahatma Gandhi] Vol. 14 ; P. 136 – 137.

(२) Young India ; 6 January 1927.

(३)The Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol. 14, P. 355 – 356.

(४) One wonders why RT was not present when Gandhi arrived- There was no compelling reason to stay in Calcutta at this time... Probably for his own complex reasons, **RT deliberately avoided welcoming Gandhi** to Shantiniketan on first arrival (Dutta & Robinson: Rabindranath Tagore; University of Cambridge; P. 196 &197)

(५) शान्तिनिकेतन में आयोजित बैठक में गाँधी जी ने भी इस बात पर दुःख व्यक्त किया कि गुरुदेव यहाँ नहीं हैं (The Collected Works of Mahatma Gandhi , Vol. 14, P. 364)

(६) "I hope Mr and Mrs Gandhi have arrived in Bolpur and shantiniketan has accorded them welcome as befits her and them . I shall convey my love to them personally when we meet " (Krishna Dutta, Andrew Robinson : Selected Letters of Rabindranath Tagore ; The Crest of Wave ; University of Cambridge; P. 158)

(७) " Andrews changed ' Mr ' to ' Mahatma ' when he published this letter in 1920s" (Krishna Dutta, Andrew Robinson: Selected Letters of Rabindranath Tagore;The Crest of Wave;University of Cambridge; P. 158 – 159)

– पूर्व सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरक
सेवानिवृत्त अध्यक्ष, राजभाषा विभाग,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई
पी– १३८, एम आई जी, पल्लवपुरम फेज–२, मेरठ २५०१

ईश्वर जीव और प्रकृति यही तीनों सृष्टि के मूल तत्व हैं’

– श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

यह वेदानुसार ऋषि दयानन्द की खोज है जो बिल्कुल सत्य है। भावेश मेरजा के शब्दों में ‘ईश्वर समस्त जड़ पदार्थों तथा चेतन जीवात्माओं में अखण्ड एक रस व्यापक है अतः वह मूर्ति पदार्थों में भी व्यापक है।’

संसार में दो चेतन पदार्थ हैं– ईश्वर और जीवात्मा और एक जड़ पदार्थ है मूल प्रकृति अथवा उससे बना हुआ सम्पूर्ण प्राकृतिक जगत्।

प्रश्न यह था कि ईश्वर तो जड़ पदार्थ में भी व्यापक है तो इससे वह पदार्थ चेतन क्यों नहीं हो जाता? यह एक विचारणीय विषय प्रस्तुत किया गया है।

पहली बात तो यह है कि परमात्मा कैसा है कोई देख नहीं सका। परन्तु ज्ञानी लोग उसके होने का ज्ञान इस आधार पर करते हैं जैसे पढ़ते हुए विद्यार्थी को देखकर विद्या का ज्ञान होता है। जैसे पुत्र को देखकर उसके जन्मदाता पिता का ज्ञान होता है। जैसे किसी सुन्दर आभूषण को देखकर

उसको बनाने वाले शिल्पी का ज्ञान होता है, जैसे किसी कारखाने में मानव उपयोग के लिए बन रही मशीनों को देखकर उसे बनाने वाले वैज्ञानिक का ज्ञान होता है उसी प्रकार मानव शरीर की विज्ञान संगत रचनाओं तथा जीवन उपयोगी भिन्न-भिन्न पंचतत्वों एवं सूर्य-चन्द्रादि की विधि पूर्वक सृष्टियों को देखकर सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का ज्ञान स्वाभाविक रूप में हो जाता है। वह हमें भले ही न दिखता हो पर उसका होना सत्य है क्योंकि जो अति सूक्ष्म सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और जिसमें सर्वज्ञता का गुण है वहीं एकमात्र ईश्वर है और उसी ने बुद्धिपूर्वक सोच समझकर सर्वश्रेष्ठ मानव तथा अन्य सब प्राणी उत्पन्न हो सकने के लिए पहले उपयोगी पंच सूक्ष्म भूतों से, पंचतत्वों एवं सूर्य-चन्द्रादि को विभिन्न प्रकार के परमाणुओं के समूहों से निर्माण कर दिया उसके पश्चात् सागर नद-नदियाँ, पहाड़-पर्वत और वनस्पतियों की उत्पत्ति की। वनस्पतियों की उत्पत्ति पहले क्यों की क्योंकि वह जानता था कि प्राणियों की उत्पत्ति के पहले इन सबकी आवश्यकता पड़ेगी। उदाहरण के लिए जैसे शिशु जन्म के पहले ईश्वरीय नियम से माता के स्तन में दूध की व्यवस्था हो जाती है वैसे ही प्राणियों के उत्पन्न के पहले शुद्ध आक्सीजन एवं फलादि के लिए वृक्ष वनस्पतियाँ पहले उत्पन्न हुईं।

यदि जड़ प्रकृति के कणों में ईश्वर चैतन्यता और सर्वज्ञता का गुण दे देता तो प्रकाश कणों के चुम्बकीय तरंग शब्दादि को वहन करने का गुलाम न बनता। आप जड़ पदार्थों से बातें भी कर सकते थे, यह संभव नहीं है क्योंकि सृष्टिक्रम के विरुद्ध है।

प्रश्न था कि यदि ईश्वर व्यापक है तो जड़ पदार्थ अथवा मूर्त्ति चेतन क्यों नहीं?

उत्तर– हमारे विचार से अग्नि में जलाने का गुण है और वह सब जगत् में व्याप्तमान है पर सभी उसके गुणों से जलने नहीं लगते।

२. सूर्य का प्रकाश सभी पदार्थों पर पड़ रहा है पर वे सब पदार्थ सूर्य जैसे प्रकाशवान नहीं बन सकते।

३. अग्नि का गुण, पृथिवी, जल, वायु, अन्तरिक्ष सभी में व्याप्त है पर वे चारों अग्नि तत्व नहीं बन सकते।

४. इस शरीर में आत्मा के द्वारा प्राण क्रियाशील है पर प्राण आत्मा के ज्ञातृत्व गुणों को नहीं अपना सकता क्योंकि प्राण चेतन से स्थूल है। इसी प्रकार ईश्वर कारण रूप प्रकृति से सूक्ष्म और आत्मा से भी सूक्ष्म है। इसलिए वह सर्वशक्ति सम्पन्न है। बनाने वाला बनने वाले पदार्थ से पृथक् होता है। अतः बनने वाला उपादान बनाने वाले का ज्ञानादि चैतन्यता गुणों को वह प्राप्त नहीं कर सकता। जैसे बनाने वाला चैतन्य है तो उसके द्वारा जो पदार्थ बनते हैं वे उस जैसे चैतन्य नहीं हो सकते। वैज्ञानिकजनों ने जितने इलेक्ट्रॉनिक

यन्त्र, दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि बनाये हैं वे सब जड़ कणों से बुद्धिपूर्वक बनाये गये हैं परन्तु वे यंत्र या उनके कण कभी भी स्वयं वैज्ञानिक नहीं बन सकते।

जड़ पदार्थ अपने आप न हिल सकता है न स्वयं कुछ बुद्धिपूर्वक बन जाने के उसमें गुण हैं- अतः उन कणों में जो गुण और गति है सब ईश्वर की देन है। जिसे व्यापक, प्रेरक और प्रकाशक कहा जाता है। वेद मंत्र कहता है कि-

यमेरिरे भृगवो विश्वेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना।
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्वो वरुणो न राजति

- ऋ १/१४३/४

हे मनुष्यों! जो विद्वानों के द्वारा जानने योग्य सर्वव्यापक, प्रशंसा योग्य सच्चिदानन्द आदि लक्षणों वाला सर्वशक्तिमान अनुपम, अतिसूक्ष्म, स्वयंप्रकाशस्वरूप और अन्तर्यामी परमेश्वर है उसे योगाङ्गों के अनुष्ठान की सिद्धि के द्वारा तुम अपने अन्दर जानो।

वैज्ञानिक ऋषि पतंजलि ने अष्टाङ्ग योग द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था तभी तो अपने योगशास्त्र में कहा है-

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।।

- योग. १/२४

क्लेश, कर्मफल और वासनाओं से (अपरामृष्ट) असम्बद्ध पुरुष विशेष ईश्वर है। पाच क्लेश अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। ईश्वर जो पुरुष जीव-जीव नहीं किन्तु पुरुष विशेष है।

ईश्वर के अर्थ हैं 'ईशनशील' अर्थात् इच्छामात्र से सम्पूर्ण जगत् के उद्धार करने में समर्थ। योगदर्शन में-

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। - योग.१/२५

ईश्वर को इस प्रकार समस्त ज्ञान का स्रोत कहते हुए बतालाया गया है कि वह (ईश्वर) जिसका काल विभाग नहीं कर सकता, पूर्व (देव्य) ऋषियों का भी गुरु है। यथा-

स पूर्वेमेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्। - योग १/२७

इस प्रकार ईश्वर के अस्तित्व को तो सभी दर्शनकारों ने माना है। यथा-

ईश्वरः कारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात्। - न्याय ४/१/१६

मनुष्य के कर्मों के फल जिसके हाथ हैं, वही ईश्वर है। गीता के पाँचवें अध्याय में दर्शाया है। **ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां.....** जिनका अन्तःकरण का अज्ञान विवेक ज्ञान द्वारा नाश हो जाता है, उनका वह ज्ञान सूर्य के सदृश उस ब्रह्म परमात्मा के स्वरूप को हृदय में प्रकाशित करता है अर्थात् साक्षात् करता है।

ईदृशेश्वरसिद्धि सिद्धाः। - साख्य. ३/५७

स हि सर्ववित् सर्वकर्त्ता। - साख्य. ३/५६

इन सूत्रों से ईश्वर की सिद्धि स्पष्ट शब्दों में बताई गई है। वह चेतन तत्व ईश्वर, प्रकृति जिसके अधीन ज्ञान व्यवस्था और नियमपूर्वक पुरुष के अपवर्ग के लिए प्रवृत्त हो रही है सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है।

१. जिसने सबको उत्पन्न किया वही ईश्वर है।

२. जिसने सृष्टि की आदि में वेदों का बीजात्मक ज्ञान दिया वही सर्वज्ञ है।

३. जो सब में प्राण के समान व्यापक और प्रकाशक है वही ब्रह्म है।

४. ईश्वर ने सूर्य की एक महत्वपूर्ण सृष्टि की है। किन्तु सूर्य में किन-किन उपादानों से कितनी संख्याओं में और किन-किन मात्राओं में कैसे क्या हो रहा है, इसका सही ज्ञान किसी को नहीं है। अतः जिसने सूर्यादि को उत्पन्न करके जिसमें अरबों वर्षों से तेजस्कृय उपादानों को अविरत ऊर्जा एवं अग्नि शिखाओं को उत्पन्न करने वाली उसके गर्भ में दिव्य अनजाने शक्तियों को प्रदान कर रहा है, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है और जिन सूर्य-चन्द्रादि के प्रभाव तथा पंचतत्वों से समुद्र एवं विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों और जीवों का जन्म हुआ है, उन सबका निमित्त कारण ईश्वर है।

बहुत से वैज्ञानिकजन आत्माओं और परमात्मा को नहीं मानते। पर वह कोई भौतिक पदार्थ तो है नहीं कि जैसे न्यूट्रोनों कणों से टक्कर लगाया और हिग्सवोसन= गॉडपार्टिकल अर्थात् सृजनकारक कण (जो प्रकाश की गति से कई गुणा अधिक है) का आविष्कार हो गया। उसी प्रकार सर्वव्यापक, प्रेरक और प्रकाशक ईश्वर को भी वैज्ञानिक उसी जैसे कण के रूप में देखना चाहते हैं पर यह सम्भव नहीं है क्योंकि वह तो उनसे परे और सर्वव्यापक होने से उसकी कोई गति नहीं है। अतः उन्हें किसी मशीन के माध्यम से ईश्वर का दर्शन नहीं हो सकता। क्योंकि दिल्ली जाने वाली रेल से कोई कोलकाता नहीं पहुँच सकता। ईश्वर को देखने और उसके आनन्द का बोध करने के लिए साधन अलग है।

ऋषि दयानन्द की समाधि कभी १८ घण्टे की हो जाती थी

इसलिए उन्हें भी अष्टांग योग की सिद्धि से सच्चे शिव परमेश्वर का साक्षात्कार हो गया था। उदाहरण के लिए एक बार ऋषि दयानन्द ने नास्तिक मुंशीराम से कहा था कि आपकी तर्कनाशक्ति प्रबल है। ऋषि ने कहा श्रद्धा की वेदी पर विश्वास का दीपक जलाओ, परमेश्वर का साक्षात्कार हो जायेगा। इस मानसिक दीक्षा ने उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया।

प्रश्न था कि ईश्वर जब मूर्त्ति में भी है तो वह चेतन क्यों नहीं हो जाती? उत्तर- वायु में प्राणादि अनेक गुण हैं वह दिखता नहीं है पर सब जगह मौजूद है उससे कोई अलग नहीं है वह मूर्त्ति, मानव एवं मुर्दों में भी है किन्तु जैसे मूर्त्ति जड़ होने से वायु में विद्यमान प्राण को ग्रहण नहीं कर सकती, उसी प्रकार सर्वोपरि ईश्वर की चैतन्यता और सर्वज्ञता के गुणों को जड़ पदार्थ प्राप्त नहीं कर सकते। केवल चेतन प्राणी ही वायु से प्राण को ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न- जब मानव को ईश्वर प्राप्त है, तो उसकी प्राप्ति के लिए कामना क्यों की जाती है। उत्तर- सच्चिदानन्द परमात्मा तो सभी को प्राप्त है, पर 'सत् चित, जीव को उसका आनन्द अप्राप्त है।' जैसे- रसगुल्ला तो मानव को प्राप्त है पर उसका स्वाद कैसा है, नहीं जानता, जब उसे खाता है तभी पता लगता है कि वह कैसा है। इसी प्रकार जब तक मनुष्य ध्यान, धारणा, और साधना नहीं करता तब तक ईश्वरानन्द का बोध उसे नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि 'सच्चिदानन्दस्वरूप ईश्वर में' 'सत्= प्रकृति से बना यह सारा संसार है।' 'चित्= जीव है' और 'आनन्द ईश्वर है।' जब तक जीव अर्थात् मनुष्य, संसार की तरफ झुका रहेगा तब तक ईश्वरानन्द से वंचित रहेगा, और जब संसार में रहते हुए ईश्वर की तरफ ध्यान देगा तभी योङ्गागों द्वारा वह स्वः स्वर्गरुप आनन्द को प्राप्त करेगा।

प्रश्न- माता-पिता के अनुसार ही गर्भ में शिशु का सर्वाङ्ग बनता है, जब जन्म लेकर बालक बड़ा होता है तो उसके मन, बुद्धि= मेधा और चेतना कीा उपज मस्तिष्क के स्नायु मण्डलों से ही होती है। कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का सम्बन्ध भी मस्तिष्क के करोड़ों स्नायु कोशिकाओं से लगा रहता है। अतः उन सबका केन्द्र भौतिक मस्तिष्क ही है, आत्मा नहीं। इस विषय में आपका क्या कहना है? उत्तर- अमैथुनी काल में मानव उत्पत्ति के पूर्व, कोई नहीं जानता था कि स्त्री-पुरुष की सांचा किस डिजाइन के अनुसार बनाया जायेगा। किन्तु कोई सर्वज्ञ (परम माता-पिता के समान) अदृश्य में विद्यमान था, तभी तो पंचतत्वों के सूक्ष्म भूतों तथा सूर्य-चन्द्र एवं दो भिन्न शक्तियों के गुणानुसार स्त्री और पुरुष का पहले सूक्ष्म शरीर में आकृति बनाया, उसके पश्चात् अनेक प्रकार के रासायनिक तत्वों एवं सूर्य के प्रकाश से जब हजारों वर्षों में 'रज-वीर्य' जैसे उपादान बन गए तब सूक्ष्म शरीर के साथ आत्माओं के संयोग से, उन

दोनों के एकत्रित हो जाने पर अनेक स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग के भ्रूण उत्पन्न हो गए और वे भूमि माता की कुक्षी से रस प्राप्त कर पलने लगे, उसके पश्चात् नर और नारी (युवा-युवती) सब तिब्बत के आस-पास विचरने लगे।

इसी विषय को संक्षेप में 'वेद ही ईश्वरीय ज्ञान' में इस प्रकार लिखा गया है'- 'नर-नारी के संयोग के बिना ही जो शरीर धारण करते हैं उसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। ईश्वरीय व्यवस्थानुसार 'रज-वीर्य' के मूल तत्वों के किसी विशिष्ट आवरण में इकट्ठा होने पर देह रचना आरम्भ हो जाती है। कालान्तर में देह परिपक्व हो जाने पर आवरण फट जाते हैं और बने बनाये शरीर बाहर आ जाते हैं। यह ऐश्वरीय सृष्टि कहलाती है। तत्पश्चात् सजातीय प्रजनन का क्रम चालू हो जाता है, और सांचे में ढल-ढल कर नित्य नये शरीर बनने लगते हैं। परमेश्वर ने जीवात्मा को नहीं बनाया, अपितु उनके देह को बनाया।'

अतः स्त्री-पुरुष के विज्ञान संगत शरीर का निर्माण आत्मा के ज्ञातृत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व के लिए ज्ञान स्वरूप परमात्मा के नियम द्वारा, मस्तिष्क की रचना भी अपने लिए नहीं आत्मा के लिए बना ताकि उसके द्वारा वह सोच-विचार और स्मरण कर सके। माना कि मन, बुद्धि, चेतना स्नायुओं का उपज मस्तिष्क है तो उन साधनों से उनका भोग और सुख-दुःखों का अनुभव कौन करता है? देखिये आम को उत्पन्न करने वाला आम का वृक्ष है, पर उसका भोग (आम नहीं) मनुष्य करता है। इसी प्रकार शरीर में जितने साधन बने हैं वह सब सूक्ष्म शरीर से आत्मा के लिए बने हैं।

मुकाम पोस्ट- मुरारई, जिला वीरभूम,
पश्चिम बंगाल- ७३१२१९, मोबाइल- ०८१५८०७८०१

पं. भीमसेन शर्मा

स्वामी दयानन्द के प्रमुख शिष्य तथा उनके ग्रन्थों के लिपिकर्त्ता, संशोधक एवं यन्त्रालय के प्रबन्धक पं. भीमसेन शर्मा का जन्म कार्तिक शुक्ला ५ सं. १९११ वि. को एटा जिले के लालपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. नेकराम शर्मा था। इनका प्रारम्भिक अध्ययन उर्दू तथा हिन्दी तक सीमित रहा। १२ वें वर्ष में इनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। ये स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित फर्रुखाबाद की संस्कृत पाठशाला में १९२९ वि. में प्रविष्ट हुए तथा लगभग ४ वर्ष तक यहाँ अध्ययन करते रहे। स्वामी दयानन्द के सहपाठी पं. युगलकिशोर तथा पं. उदयप्रकाश इस पाठशाला में अध्यापक थे। इन्हीं से पं. भीमसेन ने अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया।

अध्ययन समाप्त होने पर पं. भीमसेन स्वामी दयानन्द के साथ ही रहकर ग्रन्थ लेखन में उनकी सहायता करने लगे। अब उन्हें स्वामी जी के साथ सर्वत्र भ्रमण भी करना पड़ता था। स्वामीजी को जो ग्रन्थ लिखना अभीष्ट होता उसकी पाण्डुलिपि वे पं. भीमसेन से ही तैयार करवाते। अयोध्या निवासकाल में स्वामी जी ने उनसे ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की प्रति तैयार कराई तथा वेदांगप्रकाश के सन्धिविषय, आख्यातिक तथा सौवर आदि भागों के लेखन में पं. भीमसेन का प्रमुख भाग रहा। पं. भीमसेन का लेखन कार्य बहुत संतोषप्रद नहीं था। वे ग्रन्थों के शोधन तथा प्रूफ निरीक्षण में भी अनेक गलतियाँ करते थे। स्वामी दयानन्द के पत्र-व्यवहार से ज्ञात होता है कि वे पं. भीमसेन के कार्य से यदाकदा असन्तुष्ट हो जाते थे। जब स्वामीजी ने स्वग्रन्थों के मुद्रण एवं प्रकाशन तथा अन्यान्य वैदिक और आर्ष ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार के लिए वैदिक यन्त्रालय की स्थापना की, तो पं. भीमसेन को ग्रन्थ संशोधक के रूप में काशी एवं प्रयाग में रहकर प्रकाशन कार्य देखना पड़ा। स्वामीजी के अन्तिम राजस्थान भ्रमण के समय भी वे उनके साथ थे। स्वामीजी के निधन के समय उनकी उपस्थिति का उल्लेख महाराज के जीवनचरित्रों में आता है। उन्हें स्वामीजी के निधन के उपरान्त दो बार वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक पद पर भी रहना पड़ा था। स्वामीजी के निधन के समय तक उनके द्वारा किये गये अपूर्ण वेदभाष्य का हिन्दी भाषान्तर पूर्ण नहीं हो सका था। अतः स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने प्रस्ताव स्वीकार कर यह निश्चय किया कि पं. भीमसेन तथा पं. ज्वालादत्त को २५ रुपये मासिक पर अवशिष्ट वेदभाष्य का भाषान्तर करने के कार्य पर नियुक्त किया जाय। तद्नुकूल उक्त दोनों पण्डितों ने अवशिष्ट दयानन्दीय वेदभाष्य का हिन्दी रूपान्तर किया।

डॉ. भवानीलाल भारतीय

स्वामी दयानन्द की मृत्यु के उपरान्त पं. भीमसेन प्रयाग में रहने लगे। उन्होंने एक मासिक पत्र 'आर्यसिद्धान्त' नामक निकालना आरम्भ किया। इसमें वे स्वयं ही प्रमुख रूप से लिखा करते थे। उनके अधिकांश ग्रन्थ आर्यसिद्धान्त में धारावाहिक प्रकाशित होने के पश्चात् ही ग्रन्थाकार प्रकाशित हुए हैं। पं. भीमसेन के वैदुष्य एवं शास्त्राध्ययन में किसी प्रकार की न्यूनता लक्षित नहीं होती। उनके द्वारा लिखित विशाल साहित्य ही उनके पाण्डित्य का प्रमाण है। उपनिषद्, गीता तथा मनुस्मृति भाष्य, उनके सूत्र ग्रन्थों की टीकाएँ, अष्टाधायी की व्याख्या, दर्श, पौर्णमास आदि इष्टि पद्धतियों का निर्माण तथा सैद्धान्तिक खण्डन-मण्डन पर लिखे गये बीसियों ग्रन्थ पं. भीमसेन की प्रतिभा के परिचायक हैं। परन्तु सैद्धान्तिक निष्ठा का उनमें अभाव उस समय दीख पड़ा जब वे प्रारम्भ में तो यज्ञ तथा मृतक श्राद्ध विषयक स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों के प्रति अपनी शंका तथा संदेह व्यक्त करते रहे, किन्तु अन्ततः चूरु के सेठ माधवप्रसाद खेमका के आग्रह पर एक ऐसा अग्निष्टोम यज्ञ भी करा बैठे जिसमें आटे की पीठी के मेष, मेषी बनाकर उनका बलिदान किया गया था। इसके पश्चात् आर्यसमाज में रहना उनके लिए कठिन हो गया। १९०१ ई. में आगरा में आर्यसमाज के तत्कालीन प्रतिष्ठित विद्वानों से उनका शास्त्रार्थ हुआ और पं. भीमसेन आर्यसमाज से किनारा कर बैठे। इसके पश्चात् का उनका जीवन सनातनी भीमसेन की कहानी है, जिससे हमारा विशेष प्रयोजन नहीं है। अब वे इटावा में रहकर 'ब्राह्मण-सर्वस्व' मासिक का सम्पादन करने लगे और आर्य सिद्धान्तों के खण्डन में अपनी लेखनी को प्रवृत्त किया। स्वामी दयानन्द का शिष्य कहने और लिखने वाले पं. भीमसेन के जीवन की यह विडम्बना ही थी। स्वामी दयानन्द का यह प्रमुख विद्या-शिष्य चैत्र कृष्णा १२ सं. १९७४ वि. को परलोकगामी हुआ।

साभार– स्वामी दयानन्द के भक्त प्रशंसक व सत्संगी

प्रेरणा

अब भगवान् भी दौरे पर

– आकांक्षा यादव

अब भगवान जी भी दौरे करने लगे हैं। विश्वास नहीं हो रहा न, पर यह सच है। ५० हजार करोड़ से ज्यादा की संपत्ति के साथ देश के सबसे अमीर भगवान तिरुपति बालाजी गत दिनों दिल्ली दौरे पर थे। ये पहला मौका था जब वे अपने पूरे दलबल के साथ आंध्रप्रदेश से बाहर किसी दूसरे राज्य में पहुँचे। दरअसल, दिल्ली के नेहरू स्टेडियम में ८ नवंबर २०१५ तक 'वैभवोत्सव' का आयोजन किया गया था। यहाँ भगवान बालाजी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। यद्यपि मुख्य कार्यक्रम ७ नवंबर को था। लेकिन हर दिन यहाँ उसी तरह पूजा पाठ होता रहा, जैसा तिरुपति बालाजी में होता है। मंदिर और दर्शन को विश्वसनीय बनाने के लिए तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) ने कोई कमी नहीं छोडी। टीटीडी ही श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के प्रबंधन की जिम्मेदारी उठाता है।

पूजा पाठ का सामान २५ ट्रकों में भरकर दिल्ली लाया गया। पूजा-अनुष्ठानों के लिए ३५ पुजारियों सहित २५० मंदिर स्टाफ भी भगवान बालाजी के साथ आए। मंदिर को सजाने वाले कारीगर भी तिरुमला से ही आए। भगवान की मूर्तियों के अलावा, पर्दे भी तिरुमला मंदिर से लाए गए। तिरुपति भोग का मशहूर लड्डू और प्रसाद तैयार करने की सामग्री भी तिरुमला से ही मँगवाई गयी। यहाँ तक कि भगवान की मूर्तियों के लिए फूल भी तिरुमला और बेंगलुरु से मँगवाए गए। 'वैभवोत्सव' को इस तरह मंदिर परिसर से बाहर आयोजित करने की योजना स्वर्ण भारत ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी और भाजपा नेता वेंकैया नायडू की बेटी दीपा वैंकट ने की थी। दिल्ली दौरे के दौरान न केवल सर्वदर्शन मुफ्त थे बल्कि सभी दैनिक सेवाएँ व सोमवार की विशेष पूजा से लेकर पूराभिषेकम तक सभी वारोत्सव नेहरू स्टेडियम में खुले में आयोजित किए गए। यहाँ कुर्सी से लेकर जमीन में बैठने की व्यवस्था की गई। किसी भी दर्शन के लिए कोई फीस नहीं थी। यहाँ तक कि यदि पुरुष धोती और महिलाएँ साड़ी या सलवार सूट पहने थे तो उन्हें बालाजी के बिल्कुल करीब जाने का मौका भी मिला। हर शाम को प्रांगण में ही निकलने वाली शोभायात्रा में भी सब शामिल हो सके और पालकी को श्रद्धा से छू भी सके। ऐसा तिरुपति में कतई संभव नहीं हो पाता है। उत्सव के लिए तिरुपति बालाजी की मूर्ति को तिरुपति बालाजी से विशेष गरुड़ वाहन से लाया गया। मूल प्रतिमा वहीं विराजमान रही। टीडीडी की योजना है कि सभी राज्यों की राजधानियों में एक-एक देवस्थानम स्थापित किया जाए। ताकि जो लोग तिरुपति नहीं जा सकते, उन तक बालाजी पहुँच जाएँ। इसकी योजना बनाई जा रही है।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा

शिवभक्त चेतें!
क्या शिवरात्रि शिव शंकर नहीं?

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

यह बह्माण्ड बड़ा विशाल है। इस विशाल ब्रह्माण्ड का शासक प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला शिव= कल्याणकारक ब्रह्म, 'ओ३म्' ईश्वर है। यह ब्रह्माण्ड का स्वामी, सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्तपाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। वह तो 'ओ३म्' पदवाच्य, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, अजर, अमर, चेतन, शिव=सुखदायक, शंकर=सुखकारक आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादिशास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्य समाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया है।

पर वेदादिशास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, शंकर=सुखकारक आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं है। उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्माकुमारी मत भी है। ब्रह्माकुमारी मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बड़ी विचित्र धोखा देने वाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की 'शिव और शिवरात्रि, 'घोर कलहयुग विनाश' पुस्तक एवं 'ओमशान्ति मीडिया' समाचार पत्र सामने रखे हैं। जिनमें इनकी शिव ईश्वर संबंधी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। 'घोर कलहयुग विनाश' पुस्तक के १२वें पृष्ठ पर हिन्दू मतावलम्बियों को 'बुतपरस्त हिन्दू' ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, कराचीवासी लेखराज हैं। जिन्हें ब्रह्माकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपदेश नहीं मानते अपितु रामायण को उपन्यास एवं गीता को लेखराज का उपदेश मानते हैं। इनके अनुसार शिव यहूदियों का यहोवा है एवं मुहम्मद का अल्लाह शिव है। 'शिव और शिवरात्रि' पुस्तक के ३६ वें पृष्ठ पर पंक्ति है- 'परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है... और वह सर्वव्यापक नहीं है।' इसी प्रकार पृ. ४२ पर पंक्ति है- 'मुहम्मद साहब ने शिव को ही अल्लाह नाम दिया था, हाँ! वे मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे।' इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्माकुमारी मत ईसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है ।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है वह 'शिव और शिवरात्रि' एवं 'ओमशान्ति मीडिया' के अनुसार यह है कि यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं आना जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गति वाला भी नहीं कहा जा सकता। शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है- 'शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है।' इस प्रकार लेखराज

द्वारा चलाए गए इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध मान्यताएँ हैं।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं। अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य। वेदादिशास्त्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों मण्डल, काण्ड, अध्याय, अनुवाक, सूक्त, मंत्र, मंत्रचरण, वाक्य, वचन निर्दिष्ट हैं। उदाहरणरूपेण अथर्व मंत्र है-

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य औषधीर्वीरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये॥

- अथर्व. ७/८७/१

अर्थात् यः= जो, रुद्रः=रुद्ररूप कर्मानुसार फल द्वारा रुलाने वाला ईश्वर, अग्नौ= अग्नि में, यः= जो, अप्सु अन्तः= जलों के मध्य, यः= जो, वीरुधः= विविध शाखा एवं पत्र वाली, ओषधीः= धान, गेहूँ, कदली आदि औषधियों में, आविवेश= प्रविष्ट है, यः= जिस ईश्वर ने, इमा विश्वा= इन सब,

भुवनानि= लोकों को, चाक्लृपे= बनाया है, तस्मै= उस, अग्नये रुद्राय= अग्रणी प्रेरक रुद्र ईश्वर के लिए, नमः अस्तु= स्तुतियाँ हैं, प्रार्थनायें हैं।

मन्त्र का भाव है, रुद्र ईश्वर जगत् के अग्नि, जल, ओषधि= धन धान्य, वृक्ष आदि पदार्थों में, लोक-लोकान्तरों में व्याप्त है, सबसे अग्रगामी है। वह ही सबका उपास्य एवं प्रार्थ्य है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता का निर्देशक यजुः मंत्र है-

वेनस्तत्पश्चन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदꣳ सं च वि चैति सर्वꣳ सऽओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु॥

- यजु. ३२/८

अर्थात् जो गुहा निहितम्= बुद्धि में स्थित है, यत्र= जिस ईश्वर में, विश्वम्= सम्पूर्ण जगत्, एकनीडम= एक आश्रय वाला है, तत्= उस, सत्= चेतन सत्ता को, वेनः= ज्ञानी, पश्यत्= ज्ञानचक्षु से देखता है, तस्मिन्= उसी ब्रह्म ईश्वर में, इदम् सर्वम्= यह सब जगत्, सम् एति= प्रलय में सगत होता है, च= और, उत्पत्ति काल में पृथक् स्थूल रूप में विस्तृत, च= भी होता है, सः= वह ब्रह्म ईश्वर, विभूः= व्यापक है, प्रजासु= समस्त जड़ चेतन में, ओतः च प्रोतः= वस्त्र के खड़े आड़े सूतों की भाँति ओत है और प्रोत है।

तात्पर्य स्पष्ट है कि परमात्मा, ब्रह्म, ईश्वर जगत् के जड़ चेतन पदार्थों में व्यापक है, वस्त्र के सूत के सदृश सर्वत्र ओतप्रोत है। उसके ओतप्रोत होने से संपूर्ण जगत् एक नीड है, एक आश्रय वाला है।

वेदों की सार उपनिषदों में ईश्वर की व्यापकता के अनेक स्रोत विद्यमान हैं। श्वेताश्वेतर उपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापी नाम से निर्दिष्ट कर परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान को परमब्रह्म उपनिषद् कहा है। वचन है-

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम्। आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्परं तद् ब्रह्मोपनिषत्परमिति॥ - श्वेता. उप. १/१६

अर्थात् क्षीरे= दूध में, सर्पिः इव= घृत के सदृश, अर्पितम्= व्याप्त, सर्वव्यापिनम्= चराचर में व्याप्त, आत्मानम्= ब्रह्म ईश्वर का, आत्मविद्या= आत्मज्ञान द्वारा, तपः= तप द्वारा मूलम्= मूल स्वरूप ज्ञात होता है अथवा परमात्मा का ज्ञान

आत्मविद्या एवं तप मूलम्= आधार वाला है। तत्= उस, ब्रह्म उपनिषद्= ब्रह्म का ज्ञान, उपासना ही, परम= श्रेष्ठ है, अन्तिम स्थिति है, तद् ब्रह्म उपनिषत् परम= वह ही परम ब्रह्म ज्ञान है।

वचन का तात्पर्य है सर्वव्यापी ब्रह्म दूध में घृत की भाँति सर्वत्र समाया हुआ है। उसकी प्राप्ति का मूल आधार आत्मविद्या एवं तप हैं। वह ब्रह्म ईश्वर उपनिषद् का परम रहस्य स्वरूप ज्ञान है।

मुण्डकोपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापक निर्दिष्ट करते हुए कहा-

नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिश्यन्ति धीराः॥

- मुण्ड उप.१/६॥

अर्थात् नित्यम= सनातन, अजर, अमर, विभुम्= व्यापक सर्वगतम्= सर्वत्र पहुँचा हुआ, सुसूक्ष्मम्= सूक्ष्मातिसूक्ष्म, तत्= वह ब्रह्म, अव्ययम्= अविनाशी, यद् भूतयोनिम्= जो चराचर भूतों का निमित्त कारण व आश्रय है, उसे, धीराः= ज्ञानी, ध्यानी, परिपश्यन्ति= देखते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं।

वचन का भाव है, ब्रह्म नित्य, व्यापक सब पदार्थों को प्राप्त सूक्ष्म, अविनाशी है उसमें ही सब भूत= उत्पन्न होने वाले पदार्थ रहते हैं। परा विद्या वाले ज्ञानी उसका साक्षात्कार करने में समर्थ होते हैं।

शिवपुराणादि अन्य ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। उदाहरणस्वरूप वेद एवं उपनिषद् के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुँचा हुआ है। वह मन के समान क्या, मन से भी तीव्र गति वाला है। ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है-

अनेकजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्शत्।

- यजु. ४०/४

अर्थात् एकम्= अद्वितीय ईश्वर, अनेकजत्= गति नहीं करता, वह अचल है परन्तु मनः= मन के वेग से भी, जवीयः= अति वेगवान् है। और वह पूर्वम् अर्षत्= पहले से ही सबसे आगे जहाँ कोई चलकर जाए, वहाँ व्याप्त हुआ होता है। देवाः= चक्षुः आदि इन्द्रियों, एनत्= इस देव ईश्वर को, न आप्नुवन्= प्राप्त नहीं करती।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गति वाला है, अचल है, अवतार एवं आने जाने की विधियों से रहित है। सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है। उससे जगत् के तीनों लोकों का कण-कण व्याप्त है। व्याप्त होकर के सृष्टि

का पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है। सुख-समृद्धि के साधनों को दे रहा है। ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थों का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया, कर्म का साक्षी कैसे होता? एवं कर्मफल का दाता और न्यायकारी कैसे बनता? सुखों के साधनों को किस प्रकार देता? अतः सिद्ध है वह सर्वव्यापक है।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन, धान्य, सोना, चाँदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्पदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव= सुख का कारण, शंकर= सुखकारक ब्रह्म ईश्वर ही तो है। सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है। पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अननुमानित सम्पदा का आगार दीखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भंडार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पड़ते ही प्रकाश, दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चाँद, सितारे, सूर्य आदि बड़े-बड़े प्रकाशपुंज दीख पड़ते हैं।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाड़ों को चीरकर लोग पति, धनपति बन रहे हैं। वृक्षों को काट-बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन-देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोड़पति बन रहे हैं, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं। यह सब निराकार शिव, शंकर, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान अजर, अमर, ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है।

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन

है, सबके लिए है। किसी एक व्यक्ति, क्षेत्र, ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर ईश्वर की इस वरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति भावों से नित्य सभी का मस्तक नम है। उन भक्ति भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं। उन भक्ति भावों का सूचक मंत्र है-

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥ - यजु १६/४१

यजुर्वेद के इस मंत्र में ३ बार नमः शब्द आया है। नमः शब्द २ प्रकार के हैं। जो 'णम प्रह्वत्वे शब्दे च' धातु से असुन् एवं अच् प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः नमस्, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं जिनके नमस्कार, सत्कार, **(नमस्यति परिचरणकर्मा,** - निघ. ३/५) वज्र, अन्न **(नमः इति अन्न नाम,** - निघ.२/७) **(नमः इति वज्र नाम,** निघ. २/२०) संगति, स्तुति **(यज्ञो वै नमः,** शत.ब्रा. २/४/२/२४) आदि अर्थ हैं। जिनका प्रकरणानुसार सम्बन्ध होता है। यहाँ प्रकृत मंत्र में प्रसंगतः 'नमः' शब्द के 'स्तुति' अर्थ की संगति होगी।

इस यजुः मंत्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त 'शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय शिवतराय' ये ६ पद आये हैं। इन ६ पदों के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गंभीर भाव अभिव्यक्त हैं।

मंत्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद **शम्, मयस्, शिव** इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं। ये तीनों शब्द **शम् इति सुख नाम,** निघ. ३/६, **मयः इति सुख नाम,** निघ.३/६, **शिवम् इति सुख नाम,** निघ. ३/६ सुख के वाचक हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन ३ भेदों से सुख भी ३ प्रकार का है। **शम्** शब्द वाच्य सुख आध्यात्मिक- मोक्ष का सुख है, **मयस्** शब्द वाच्य सुख आधिदैविक- देव, इन्द्रिय अर्थात् मन, प्राण, १० इन्द्रियों एवं आत्मा का सुख है। **शिव** शब्द वाच्य सुख आधिभौतिक- सांसारिक, धन-धान्य, रुपया-पैसा, सगे-सम्बन्धी आदि का सुख है।

शम् तथा **मयस्** उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में **भू सत्तायाम्** धातु से **अच्** प्रत्यय द्वारा **शम्भव, मयोभव** शब्द सिद्ध होते हैं। जिनका चतुर्थी में शम्भवाय, मयोभवाय रूप बनता है। जिनका अर्थ होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न करने वाले के लिए।

शम् तथा **मयस्** उपपद रहते **डुकृञ् करणे** धातु से **अच्** प्रत्यय द्वारा **शंकर, मयस्कर** शब्द निष्पन्न होते हैं। जिनका चतुर्थी में **शंकराय, मयस्कराय** प्रयोगरूप बनता है। जिनका अर्थ है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए।

इसी प्रकार **शिव** शब्द से अतिशय अर्थ में **तरप्** प्रत्यय करके **शिवतर** शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में **शिवतराय** प्रयोगरूप बना है। जिसका अर्थ है आधिभौतिक- सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए। प्रकृति, सभी का कल्याण, सुख करती है अतः शिव है। ईश्वर भी सबका कल्याण, सुख करता है, किन्तु प्रकृति से अतिशय रूप में करता है, अतः

वह शिवतर है।

इस प्रकार नमः शम्भवाय इस मंत्र का अर्थ हुआ-

हे-ईश्वर! आप शम्भवाय-शम्= आध्यात्मिक मोक्ष, सुख उत्पन्न करने वाले के लिए, च= और, मयोभवाय= आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करने वाले के लिए, नम= स्तुति है च= और, शंकराय-शम्= मोक्ष सुख को करने वाले के लिए, च= और मयस्कराय- मयस्= मन, इन्द्रिय आदि के सुख को करने वाले के लिए नम= स्तुति है, च= और, शिवाय= धन धान्य आदि मंगल सुख करने वाले के लिए, च= और, शिवतराय= अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए नमः= स्तुति है।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे ओ३म्, ब्रह्म, ईश्वर आदि नाम हैं वैसे ही उस के शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर नाम हैं। वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है। सुखों की उत्पत्ति का वह ही करः, कर्ता= करने वाला है। शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं। शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें।

ओ३म् पदवाच्य शिव, शंकर ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिए शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात गुजरात प्रान्त के टंकारा गाँव के ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द ने महत्वपूर्ण अध्यवसाय किया था। उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया, सत्य ही खोज निकाला। उस सत्य का प्रकाश महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय. मंत्र के अर्थों में निर्दिष्ट किया है।

'नमः शम्भवाय च' इस यजुः मंत्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्यम्, आर्याभिविनयः, पंचमहायज्ञविधिः आदि स्थलों पर किए हैं। महर्षि ने उन अर्थों में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुए सुख, कल्याण के गंभीर तत्वों का संकेत किया है।

महर्षि दयानन्द द्वारा संकेतित मंत्रार्थों के सुख कल्याण के गंभीर तत्व प्रत्येक, शिव, शंकर के उपासक के लिए अति उपादेय हैं। उदाहरणतः पंचमहायज्ञविधिः में निर्दिष्ट महर्षि के गंभीर भाव हैं-

नमः शम्भवाय च= जो सुखस्वरूप, मयोभवाय च= संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, नमः शंकराय च= कल्याण का कर्ता, मोक्षस्वरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला, मयस्कराय च= अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म कामों में युक्त करने वाला, नमः शिवाय च शिवतराय च= अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देने हारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

(पञ्चमहायज्ञविधि, सन्ध्यो. पृ २७)

इन उपर्युक्त वेदमंत्र एवं महर्षि दयानन्द के मंत्रार्थ से भली भाँति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न-भिन्न पदार्थों के नहीं। सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि ज्ञानस्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है। उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है। वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, शम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गंभीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरात्रि पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोड़ें और शिवरात्रि पर्व व्रत को सार्थक करें।

१. सर्वावकाशदं सर्वव्यापकं गगनात्मकम्। ईशानाख्यं महेशस्य रूपं दिवि विसर्पति।। शिवपु.शतक.९-१०, पृ.३७४।।
महादेवस्य तद्रूपं महादेवस्य चाहवम्। तथा विश्वस्य सम्प्रीत्या प्रीतो भवतिशंकरः।। शिवपु.शतः.११,१४, पृ. ३७४।।

प्राचार्या पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी- १०
आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज, राज. ३०७०२७

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

समाचार

बहादुर सिपाही तंजील अहमद व उनकी पत्नी फरजाना को विनम्र श्रद्धांजलि

एन.आई.ए. के जांबाज अफसर तंजील अहमद जब अपने परिवार सहित एक निजी कार्यक्रम में जा रहे थे, असामाजिक तत्वों ने उनकी कार पर ताबडतोड़ गोलियाँ बरसाईं। श्री तंजील अहमद को २१ गोलियाँ लगीं एवं कुछ गोलियाँ उनकी पत्नी को भी लगीं। तंजील ने उसी समय दम तोड़ दिया और उनकी पत्नी ने अस्पताल में जीवन और मृत्यु के बीच में झूलते हुए दस दिन बाद इस संसार से विदा ली। माँ भारती ने एक बहादुर कमाण्डो को खोया है, यह पूरे राष्ट्र के लिए अपूरणीय क्षति है। हम उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। आशा ही नहीं विश्वास भी करते हैं कि ऐसे बहादुर राष्ट्र भक्त का नाम सदैव आदर व सम्मान के साथ लिया जायेगा।

वासन्ती नवसस्येष्टि पर्व पर पंचकुण्डीय यज्ञ

उदयपुर! २३ मार्च होलिकोत्सव पर वैदिक रीति से पंचकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न कर आदर्श रूप में वासन्ती नवसस्येष्टि पर्व आयोजित कर

आर्यसमाज हिरण मगरी ने पर्यावरण शुद्धि एवं संरक्षण का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। यह समारोह सेक्टर-३ स्थित विवेक पार्क में विवेक पार्क विकास समिति के सहयोग से यज्ञ के पुरोहित प्रो. डा. अमृत लाल तापड़िया ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ सम्पन्न कराया।

समारोह के मुख्य वक्ता श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने होली पर्व के माध्यम से परिवार व समाज को संगठित होकर परस्पर प्रेम व मिल जुल कर प्रगति करने का आह्वान किया।

उन्होंने अपने वक्तव्य में शहीद भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु की देश की आजादी के लिये आज ही के दिन दी गई शहादत को नमन करते हुये कहा कि हमें उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर उनसे प्रेरणा लेते हुए राष्ट्रहित में आगे कदम बढ़ाने चाहिये।

श्री इन्द्रदेव पीयूष ने भजन प्रस्तुत किए। तबले पर संगति श्री ओम कुमावत ने की। विवेक पार्क विकास समिति के सचिव श्री दिलखुश सेठ ने बंधुत्व की भावना बढ़ाने हेतु आह्वान किया।

आर्यसमाज के प्रधान श्री भंवर लाल आर्य ने स्वागत किया तथा आभार प्रो. डा. अमृतलाल तापड़िया ने किया। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- आर्य समाज हिरण मगरी, सेक्टर- ४, उदयपुर

सिंहस्थ में वैदिक प्रचार शिविर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल व भारत वर्ष की समस्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में भव्य आयोजन। सिंहस्थ महापर्व- २०१६। वैदिक धर्मप्रचार शिविर एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनांक २२ अप्रैल २०१६ से २२ मई २०१६ तक चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा सं. २०७३ तक सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार शिविर, प्लाट नं. ६२-६३, हनुमंत बाग के सामने, बडनगर मार्ग, उज्जैन (म.प्र.), पर आयोज्य। विश्वभर के आर्यों से भागीदारी एवं सहयोग हेतु निवेदन है।

सम्पर्क सूत्रः **०९८२७००७८८८, ०९८२७०१०४३०, ०९४२५९३०४८४**

गुरुकुल झज्जर की स्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गुरुकुल का स्थापना शताब्दी समारोह

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का स्थापना शताब्दी समारोह दिनांक १२-१३ मार्च २०१६(शनिवार-रविवार) को महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। गुरुकुल के इस विशाल स्थापना शताब्दी समारोह में राष्ट्र रक्षा, गो-रक्षा, आर्यवीर सम्मेलन आदि के अतिरिक्त सामाजिक सद्भावना सम्मेलन विशेष रूप से आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के साधु-संन्यासी, हरियाणा तथा भारत सरकार के राजनेतागण एवं वैदिक विद्वानों ने सहभागिता की।

शोक समाचार

श्री नटवरलाल शर्मा को पुत्र शोक

न्यास के सक्रिय सहयोगी श्री नटवरलाल शर्मा के एकमात्र पुत्र बीस

वर्षीय शुभम् का निधन दिनांक १४ अप्रैल २०१६ को हो गया। माता-पिता के निकट यह एक मर्मान्तक पीड़ा है। शुभम् बचपन से ही न्यास द्वारा आयोजित वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर में अपनी बहिन भाग्यश्री के साथ भाग लेता रहा था। वह एक होनहार व संस्कारित बालक था। असीम दुःख की इस बेला में न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार श्री नटवर लाल एवं उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं एवं प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करें।

पं. नरेशदत्त को भ्रातृ शोक

अत्यन्त दुःख का विषय है कि आर्यजगत् के मूर्धन्य भजनोपदेशक पण्डित नरेशदत्त आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री महेशदत्त आर्य का आज दिनांक १६ अप्रैल को निधन हो गया है। उनका देहावसान दिल्ली स्थित एम्स में हुआ।

महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल का निधन भारत के व्यापार जगत् के लिए ही नहीं आर्य जगत् के लिए भी दुःखद है। वे सत्यार्थप्रकाश न्यास के वरिष्ठतम सम्मानीय न्यासी थे। उनका मार्गदर्शन हमें सदैव प्राप्त था। न्यास परिवार उनके जाने से अपने आपको ठगा सा महसूस कर रहा है। पर विधाता की इस इच्छा के समक्ष अपना सिर झुकाते हुए संकल्प करता है कि न्यास उनके बताये हुए रास्ते पर सदैव गतिशील रहेगा। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें और शोकाकुल परिवार एवं आर्यजनों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

- अशोक आर्य

हलचल

श्रुति श्रोत्रिय का शुभ विवाह सम्पन्न

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् एवं प्रखर वक्ता आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय की पुत्री सौ.का. श्रुति का विवाह दिनांक १६ अप्रैल २०१६ को दिल्ली निवासी श्री विकास के साथ सम्पन्न हुआ। हर्ष के इस अवसर पर आर्य जगत् के अनेक नेता, विद्वान् एवं गणमान्य जन उपस्थित थे। संस्कार श्री आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश के निर्देशन में बड़ी ही सुन्दरता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पाणिग्रहण संस्कार के कतिपय मंत्रों की आचार्य जी ने हृदयग्राही व्याख्या प्रस्तुत की। न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार नव दम्पति के सुखद व मंगलमय सुदीर्घ जीवन के लिए शुभकामनाएँ ज्ञापित करते हैं।

॥ओ३म्॥

नवलखा महल, उदयपुर में वैदिक परिवार शिविर

२०, २१ व २२ मई २०१६

उद्देश्य

वैदिक धर्म व्यक्तिगत नहीं अपितु पारिवारिक धर्म बने, परिवार के सभी सदस्य सामूहिक रूप से प्रति दिन प्रातः सायं संध्या एवं दैनिक यज्ञ करें। पञ्च महायज्ञ एवं १६ संस्कारों को परिवार में श्रद्धापूर्वक किया जाय।

सान्निध्य

डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), स्वामी सुधानन्द सरस्वती, योगगुरु उमाशंकर शास्त्री एवं भजनोपदेशक श्री केशवदेव शर्मा

दिनचर्या

प्रातः ४.०० बजे से रात्रि ६.४५ बजे तक
शयनः रात्रि ६.४५ से प्रातः ४.०० बजे तक

प्रशिक्षण विषय

(१) ईश्वर (२) धर्म (३) वेदादि शास्त्र (४) पञ्च महायज्ञ (५) १६ संस्कार परिचय (६) वर्णाश्रम व्यवस्था (७) कर्मफल और पुनर्जन्म (८) वैदिक त्रैतवाद (६) परिचय- ऋषि दयानन्द और उनके प्रमुख ग्रन्थ। सत्यार्थ प्रकाश-संस्कार विधि- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (१०) आर्य समाज का इतिहास, उद्देश्य एवं कार्य। मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ।

शिविरार्थी हेतु आवश्यक वस्तुएँ व निर्देशन

१.सन्ध्या-हवन मंत्र पुस्तक २. विषय वस्तु लिखने के लिये कापी व पेन ३. दिनचर्या का श्रद्धापूर्वक पालन ४. प्रातः जागरण तथा रात्रि कालीन शयन मंत्रों के साथ भजन ५. शिविर में सफाई का पूरा ध्यान रखना ६. भारतीय वेश-भूषा (विशेषरूप से सन्ध्या एवं यज्ञ के समय)

आवश्यक

अग्रिम १०० रु. प्रति व्यक्ति प्रेषित कर पंजीयन करा लें। स्थान सीमित हैं अतः पूर्व पंजीकृत जनों को ही प्रवेश मिल सकेगा। शिविरार्थियों को १६ मई सायं तक नवलखा महल पहुँचना अनिवार्य है।

संयोजक– नारायण मित्तल, चलभाष– 09414169440

प्रतिस्वर

सत्यार्थ सौरभ का मार्च २०१६ का अंक पढ़ने को मिला इसमें अंकित लेख 'वेद-सुधा' व 'आत्म निवेदन' बड़े ही विवेचनात्मक शैली में लिखे गये हैं। 'आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द का करिश्मा' भी सराहनीय है। स्वामी श्रद्धानन्द के सत्यार्थ प्रकाश पर विचार भी खोज पूर्ण हैं। जीवन में पंच महायज्ञों का विशेष महत्त्व दिखाते हुए आदर्श गृहस्थों के निर्माण में इनका महत्व दर्शाया गया है। आर्य आक्रमण सिद्धान्त लेख में अंग्रेजों के षड्यंत्र का भाण्डाफोड़ हुआ है। उन्होंने सुनियोजित तरीके से भारतीय धारणा में मिलावट की है। भारतीय सहिष्णुता की विशेषता और धर्मो रक्षति रक्षितः में कैसे राजनेताओं पर व्यंजनात्मक शैली में अधिकार चेताया गया है। सधन्यवाद।

– ओम स्वरूप शर्मा , जिला न्यायालय, भिवानी

विदुषी लेखिका 'सत्यार्थदूत' सरोज आर्या (जयपुर) की नवीनतम कृति 'मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का सरलतम उपाय–ब्रह्मयज्ञ' मुद्रित हो चुकी है। पाठकगण लेखिका की शैली तथा वैदुष्य से परिचित हैं तथा उनकी नवीन रचना का इन्तजार करते हैं। सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान सदस्यों तथा ३१ अगस्त २०१६ तक जो भी नवीन सदस्य बनेंगे उन सभी को उक्त पुस्तक श्री ओ.पी. वर्मा, प्रधान आर्यसमाज किशनपोल बाजार, जयपुर के सौजन्य से पूर्णतः निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

पुस्तक विवरण ८.६५.६ पृ.१२७, पेपरबैक।

शीघ्रातिशीघ्र सत्यार्थ सौरभ के सदस्य बनें और उक्त पुस्तिका निःशुल्क प्राप्त करें।

–सुरेश टोदी, व्यवस्थापक

सत्यार्थ प्रकाश पहेली-३/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली ३/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- सर्वश्री नन्द किशोर प्रसाद, सरायकेला (झारखण्ड), डॉ. सत्य प्रकाश, सण्डिला (उ.प्र.), वैद्या श्रीमती आशा भूषण (भारती), मुजफ्फरपुर (बिहार), हर्षवर्द्धन कुमार आर्य, नेमदारगंज (बिहार), संजय आर्य, कतलूपुर (हरियाणा), रमेश चन्द्र प्रियदर्शन, बेरगनिया, सीतामढी (बिहार), रमेश आर्य, दीनानगर (पंजाब), किरण आर्या, कोटा (राजस्थान), श्रीमती उषा आर्या, उदयपुर (राजस्थान), मुकेश पाठक, उदयपुर (राजस्थान), सत्यनारायण तोलम्बिया, शाहपुरा (राजस्थान), मीना वासुदेव भाई ठक्कर, डिसा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर, डिसा (गुजरात), इन्द्रजित् देव, यमुनानगर (हरियाणा), अमित कुमार, मेहाड़ा, झुन्झुनु (राजस्थान), यज्ञसेन चौहान, बिजयनगर (राजस्थान), महेश चन्द्र सोनी, बीकानेर (राजस्थान), वी.पी. सिंह बाना, अलीगढ़ (उ.प्र.), वासुभाई मगनलाल ठक्कर, डिसा (गुजरात), गोर्धनलाल झवर, आष्टा (म.प्र.), मोहन यादव, अधरमा (झारखंड), नारायण लाल राव, उदयपुर (राजस्थान), जगदीश प्रसाद हरीत, मन्दसौर (म.प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नए नियम पृष्ठ ०८ पर अवश्य पढ़ें

भूलसुधार- कृपया अप्रैल मास में छपे विजेताओं के नाम में 'सत्यार्थ प्रकाश-१० के विजेता' के स्थान पर 'सत्यार्थ प्रकाश-२/१६ के विजेता' पढ़ें एवं 'इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी' के स्थान पर 'सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई' ऐसा पढ़ें।

जंगलीपन से सौम्यता की ओर

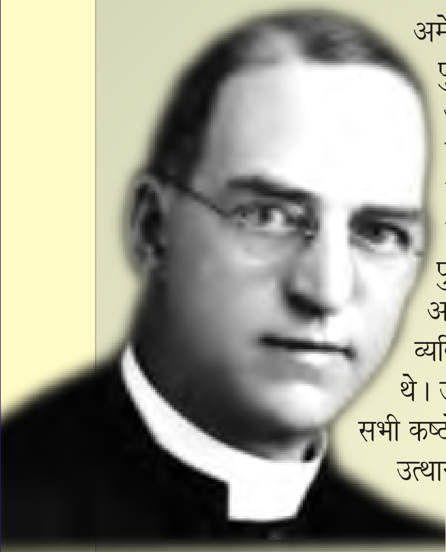

अमेरिका के फादर एडवर्ड जोसेफ फ्लेनगन (१८८६-१९४८) कैथोलिक परम्परा के एक पुरोहित थे। उन्होंने उन किशोर अपराधियों को सुधारने का बीड़ा उठाया जो संगठित अपराधियों के कुसंग में पड़कर हत्या, लूटपाट, हिंसा तथा क्रूरता जैसे कार्यों में लिप्त हो जाते थे। उनके द्वारा स्थापित बालनगर (Boys Town) में सभी जातियों तथा सम्प्रदायों के अनाथ बालक थे। पथभ्रष्ट अपराधी बालकों को भले तथा सदाचारी नागरिकों में रूपान्तरित करने में वे जो प्रयास तथा धैर्य दिखाते थे, वह अतुलनीय था। पुलिस द्वारा पकड़े गए युवकों को वे अपने बालनगर में ले आते। उन लोगों के अपराधिक कार्यों का दोषी पाए जाने के बावजूद फ्लेनगन का विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति मूलतः भला है और वे अपनी इसी धारणा के अनुरूप उनके साथ व्यवहार करते थे। उन्होंने उन लोगों पर विश्वास किया, उन पर प्रेम की वर्षा की, उनके द्वारा दिए गए सभी कष्टों तथा किए गए सभी उत्पातों को सहा और उनके कल्याण के लिए प्रार्थना तथा उनके उत्थान हेतु परिश्रम किया, ताकि उनके जीवन की गाड़ी एक बार फिर सही रास्ते पर लग जाए। इस प्रकार फ्लेनगन सबके प्रिय और प्रेम, सहनशीलता तथा सेवा भाव के जीवन्त निदर्शन बन गए।

फ्लेनगन का दृढ़ विश्वास था कि बच्चों को झिड़की, गाली या सजा के द्वारा नहीं, बल्कि उनके समक्ष एक अनुकरणीय आदर्श चरित्र प्रदर्शित करके ही उनका दिल जीतकर उन्हें सुधारा जा सकता है। 'बालनगर के फादर फ्लेनगन' नामक पुस्तक में वर्णित निम्नलिखित घटना से पता चलता है कि किस प्रकार उन्हें एक अत्यन्त हिंसक तथा क्रूर युवक को सुधारने में सफलता मिली थी।

"banish the rod and cherish the child"

अपने माता-पिता का देहान्त हो जाने से एड्डी चार वर्ष की आयु में ही अनाथ हो गया था। आठ वर्ष की आयु में वह एक अपराधी संगठन का नेता बनने की क्षमता हासिल कर चुका था। एक विचित्र बात यह भी थी कि उसके दल के अधिकांश अपराधी आयु में उससे बड़े थे। यहाँ तक कि युवकों ने भी इस बालक को अपना नेता मान लिया था। एड्डी ने हत्याएँ की थीं। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए उसने अकेले ही एक बैंक को लूटा और हजारों डॉलर लेकर चम्पत हो गया। एक चुराई पिस्तौल की सहायता से उसने अनेक होटलों को लूटा। एक ऐसे ही अवसर पर जब वह एक वृद्धा की हत्या करने के लिए गोली चलाने जा रहा था, सुरक्षा बलों ने उसे पकड़ लिया।

जब वह बालनगर पहुँचा तो उसके मन में पुलिस का जरा भी भय न था। वह जानबूझकर बदमाशी करता, दूसरों पर धौंस दिखाता, सामने आयी किसी भी चीज को लूट खसोट लेता और अपनी कक्षा के अन्य लड़कों के प्रति अनुचित भाषा प्रयोग करता। यहाँ तक कि वह सबके द्वारा सम्मानित फ्लेनगन का उल्लेख करते समय भी बुरे शब्दों का उपयोग करता। हर चीज को वह घृणा की दृष्टि से ही देखता। स्कूल के खेलकूद या वाद्यवृन्द में भाग लेना या खेत में काम करना-सब कुछ उसे उबाऊ ही लगता था। सार्वजनिक प्रार्थना के समय वह बिल्ली की आवाज की नकल उतारता। घण्टों परिश्रम करके दूसरे लड़कों द्वारा निपटाए हुए काम को वह क्षण भर में बरबाद कर डालता। बालनगर में उसके आने के छह महीनों के बाद तक, उसके चेहरे पर मुस्कान की एक भी झलक और उसकी आँखों में आँसू की एक भी बूँद देखने में नहीं आयी। लोगों को लगता था कि उसके सिर से पैर तक केवल विष ही विष भरा है। छात्रावास के प्रबन्धक से यह सब सहन नहीं हुआ। उसने

फ्लेनगन को एक पत्र लिखा-
प्रिय फादर फ्लेनगन,
मैंने सुना है कि आपके मतानुसार इस जगत् में कोई व्यक्ति बुरा नहीं है। क्या आप मुझे बताऐंगे कि इस एड्डी नामक लड़के के विषय में आपका क्या कहना है?

इस प्रकार समय बीतता गया। एक रात सोते समय एड्डी कराह रहा था। उसके चेहरे की ओर देखते ही फ्लेनगन समझ गए कि उसे तेज बुखार चढ़ा हुआ है। यद्यपि वे एड्डी के अदम्य उपद्रवों से काफी कष्ट सह चुके थे, तथापि फ्लेनगन ने उन्हें पूरी तौर से भुलाकर, बड़े स्नेह और यत्न के साथ उसकी सेवा की।

बीमारी से उठने के बाद भी फ्लेनगन, उनके शिक्षक साथी तथा सहपाठी उसकी ओर विशेष स्नेह तथा सद्भाव दिखाते रहे। वरिष्ठ लड़के मनोरंजन हेतु उसे सिनेमा दिखाने ले जाते। भोजन के समय उसका विशेष ध्यान रखा जाता। उसके लिए किसी भी वस्तु का अभाव नहीं होने दिया गया। परन्तु इसके बावजूद एड्डी के चेहरे पर मुस्कान का कोई भी चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

एक दिन एड्डी सीधा फ्लेनगन के कार्यालय में पहुँचकर बोला, तो आप मुझे एक अच्छा लड़का बनाना चाहते हैं? क्या आपको लगता है कि आपको इसमें सफलता मिलेगी? अभी-अभी मैं मेट्रन को लात मारकर आ रहा हूँ, इस पर आपका क्या कहना है?

फ्लेनगन ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, 'मेरा अब भी यही विश्वास है कि मूलतः तुम एक अच्छे लड़के हो।'

अभी मैंने आपको क्या कहा? इसके बावजूद आप वही झूठ दुहराते जा रहे हैं। आप जानते हैं कि मैं अच्छा लड़का नहीं हूँ तो भी आप कहे जा रहे हैं कि मैं एक अच्छा लड़का हूँ। बारम्बार एक ही झूठ बोलकर क्या आप अपने आपको एक पक्का मिथ्यावादी नहीं प्रमाणित कर रहे हैं?

फ्लेनगन ने क्षण भर सोचा। उन्हें लगा कि लड़के के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ आ पहुँचा है। उन्होंने एड्डी से पूछा, बताओ तो एक अच्छे लड़के की क्या पहचान है, यही न कि वह अपने बड़ों का कहना मानता है?

एड्डी ने हामी भरते हुए सिर हिलाया।

यही न, कि वह अपने शिक्षकों का कहना मानता है?

हाँ, एड्डी बोला।

"There is no such thing as a bad boy."

फ्लेनगन ने कहा, तो फिर तुम यही तो करते रहे हो। परन्तु एड्डी यहाँ से पहले तुम्हें भले शिक्षक नहीं मिले। आवारा लोग तुम्हारे मागदर्शक थे और तुमने उन्हीं का कहना माना। वे लोग तुम्हें गलत रास्ते पर ले गए। तुमने उनका अनुसरण किया और सोचने लगे कि तुम सचमुच ही बुरे हो। परन्तु यदि तुम अच्छे शिक्षकों का अनुसरण करो, तो तुम भी अच्छे बन जाओगे।'

इन शब्दों ने एड्डी के मर्मस्थल को स्पर्श कर लिया। क्षणभर वह मौन खड़ा हुआ सोचता रहा। उसे लगा कि फ्लेनगन के शब्दों में कुछ सच्चाई अवश्य है। इससे उसके हृदय से यह धारणा दूर हो गई कि मूलतः वह एक बुरा लड़का है। वह मेज के दूसरी ओर खड़े फ्लेनगन के पास गया। फ्लेनगन ने उसे अपनी बाहों में भरकर आलिंगन पाश में बाँध लिया। एड्डी की आँखों से आँसू फूट कर उसके कपोलों को भिगोने लगे।

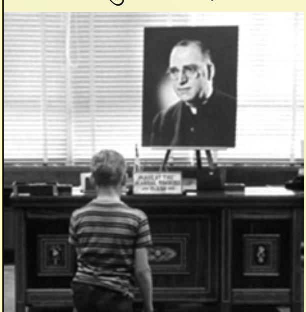

दस वर्ष बाद एड्डी उच्च श्रेणी में पास होकर ग्रैजुएट हो गया। सेना में भर्ती होकर उसने युद्ध में भाग लिया। उसे विशिष्टता के लिए कई पुरस्कार मिले। उसे अपने मित्रों तथा परिचितों से भी स्नेह तथा सम्मान मिला। अब वह सबकी नजरों में एक विश्वस्त तथा ईमानदार व्यक्ति बन चुका था।

अपनी अच्छाई के विषय में दृढ़ विश्वास ने उसके दिल में बसे हुए उसके मूलतः बुरे होने की धारणा को दूर कर दिया। फ्लेनगन को उस बालक में अन्तर्निहित दिव्यता पर पूर्ण विश्वास था। उनका विश्वास कितना फलदायी रहा! सन्देह तथा अविश्वास की दृष्टि से देखे जाने वाले एक पथभ्रष्ट बालक ने अपनी अच्छाई में आत्मविश्वास पाकर अपने जीवन में काफी उन्नति कर ली।

साभार- बालनगर के फादर फ्लेनगने

सत्यार्थ-पीयूष राज्य की उत्पत्ति एवं उद्देश्य

इस विषय में महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में जो संकेत हैं उनसे प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में सभी मनुष्य वेदानुकूल चलते हैं, तब कोई अराजकता न होने से राज्य की आवश्यकता नहीं होती। पर कुछ मनुष्य काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह इत्यादि पाशविक प्रवृत्तियों के वशीभूत हो जाते हैं। यह दूसरों के धन, सम्पत्ति तथा अस्मिता पर हमला करते हैं। ये दस्यु कहलाते हैं। इन्हीं को नियन्त्रण में करने के लिए राज्य अस्तित्व में आता है। अर्थात् राज्य का प्रारम्भिक उद्देश्य प्रजा को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करना होता है, उसे मत्स्य न्याय से बचाना होता है।

मानव प्रजा को राज्य व्यवस्था तथा राजा के अधीन रखने की परम्परा का विधान मुख्य रूप से वेदों में मिलता है। वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि राज्य संस्था के निर्माण का प्रयोजन मुख्य रूप से धार्मिक, सज्जन पुरुषों की, बलवान, अधर्मी, दुष्ट पुरुषों से रक्षा, न्यायपूर्वक धर्माचरण का संवर्धन, धनादि का रक्षण है। ऋग्वेद में राज्य-उत्पत्ति के सिद्धान्त तथा लक्ष्य पर प्रकाश डाला गया है:

पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः।
पहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य॥

– ऋ. मं. १/३६/१५

अर्थात्- 'हे! बड़ी-बड़ी विद्यादि ऐश्वर्य के तेज से युक्त, अत्यन्त तरुणावस्था तथा तेज से युक्त राजन्! आप कपटी, अधर्मी, दान, धर्मरहित, कृपण (राक्षसः) महाहिंसक, दुष्ट मनुष्यों से हमें बचाइये तथा मारने की इच्छा वाले शत्रुओं से हमारी रक्षा कीजिए।' (महर्षि दयानन्द वेद भाष्य)

अतः यह कहा जा सकता है कि जब प्रजाशक्ति उत्क्रान्त होती है तो राज्य/राजा सृष्टि होती है।

इसी संदर्भ में मनु का प्रमाण भी दृष्टव्य है-

अराजके हि लोकेऽस्मिन्सर्वतो विद्रुते भयात्।
रक्षार्थमस्य सर्वस्य राजानमसृजत्प्रभुः॥ – मनुस्मृति ७/३

बिना राजा के इस जगत् में सब ओर भय के कारण व्याकुलता और घबराहट फैल जाने से राज्य की सुरक्षा के लिए परमात्मा ने 'राजा' पद का सृजन किया है, अर्थात् राजा बनाने की प्रेरणा मनुष्यों को दी है। अतः सभी मनुष्यों की सुरक्षा व्यवस्था हेतु एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ी जो सभी मनुष्यों की रक्षा कर सके और ऐसी व्यवस्था बनाये, जिससे किसी को कोई भी परेशान न करे। ऐसी व्यवस्था करने वाले योग्य व्यक्ति को राजा की संज्ञा दी गई है।

अथर्ववेद में कहा है-

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः।
वाजे चित्रं हवामहे॥ – अथर्व. २०/१४/१

हे अपूर्वशक्ति सम्पन्न सम्राट! आपसे रक्षा चाहने वाले हम प्रजाजन आपको राजगद्दी पर बुलाते हैं, आपके भरण-पोषण की (कर आदि के द्वारा) व्यवस्था हम करेंगे। कौटिल्य अर्थशास्त्र में एक प्रकरण आता है कि जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है ठीक उसी प्रकार जब बलवानों ने निर्बलों का जीवित रहना कठिन कर दिया तो इस अन्याय से पीड़ित प्रजा ने अपनी सुरक्षा व कल्याण

के अभिप्राय से विवस्वान् के पुत्र मनु को अपना राजा बनाया और तभी से प्रजाजनों ने अपनी खेती की उपज का छठा व आँठवा अथवा बाहरवाँ भाग तथा शिल्पी, जौहरी व स्वर्णकारों ने अपनी आय का पचासवाँ भाग, कर के रूप में देना स्वीकार किया था।

महामति चाणक्य ने लिखा है कि- 'राजा का कर्त्तव्य है कि वह समाज को धर्म के अनुसार व्यवस्थित करे, अपराधियों का दमन करे और प्रजा उसे निर्धारित कर दे।'

(अर्थशास्त्र १/१३/६-७)

यहाँ स्पष्ट है कि समाज में धर्म (मानवीय मूल्यों) की स्थापना, तथा प्रजा की सुरक्षा ही राज्य का प्रथम हेतु है। प्रजा इसी के एवज में उसे कर देती है। महाभारत में राजसूय यज्ञ में शिशुपाल ने युधिष्ठिर से स्पष्ट कहा था कि हम तुम्हें डर की वजह से कर देते हैं ऐसी बात नहीं है, हम तुम्हें धर्म-प्रवर्त्तक जानकर 'कर' देते हैं।

सम्पादक- अशोक आर्य

घटाएँ अपना वजन

वजन बढ़ने का विज्ञान बड़ा सीधा-साधा है। यदि आप खाने-पीने के रूप में जितनी कैलोरी ले रहे हैं उतनी खर्च नहीं करेंगे तो आपका वजन बढ़ना तय है। दरअसल बची हुई कैलोरी ही हमारे शरीर में वसा के रूप में इकट्ठा हो जाती है और हमारा वजन बढ़ जाता है।

अब यदि आप Overweight या Obese हैं तो ही आपको अपना वजन कम करने की जरुरत है। और यदि आपको इसकी जरुरत है तो आपको ये भी जानना चाहिए कि जिस स्थिति में आप पहुँचे हैं उसकी वजह क्या है। वैसे आम-तौर पर वजन बढ़ने के दो कारण होते हैं:

खान-पान: वजन बढ़ने का सबसे प्रमुख कारण होता है हमारा खान-पान। यदि हमारे खाने में कैलोरी की मात्रा अधिक होगी तो वजन बढ़ने की संभावना ज्यादा हो जाती है। अधिक तला-भुना [fast-food] देशी घी खाने, कोल्ड ड्रिन्क आदि पीने से शरीर में जरुरत से ज्यादा कैलोरी इकट्ठा हो जाती है जिसे हम बिना अतिरिक्त प्रयास के burn नहीं कर पाते और नतीजा हमारे बढ़े हुए वजन के रूप में दिखाई देता है। यदि आप इस बात की जानकारी रखें कि आपके शरीर को हर दिन कितनी कैलोरी की आवश्यकता है और उतना ही consume करें तो आपका वजन नहीं बढ़ेगा।

Inactive होना: अगर आपकी दिनचर्या ऐसी है कि आपको ज्यादा हाथ-पाँव नहीं हिलाने पड़ते तो आपका वजन बढ़ना लगभग तय है। खास तौर पर जो लोग घर में ही रहते हैं या दिन भर कुर्सी पर बैठ कर ही काम करते हैं

उन्हें जान-बूझ कर अपनी दिनचर्या में कुछ शारीरिक गतिविधियों को स्थान देना चाहिए। जैसे कि आप लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का प्रयोग करें, अपनी रुचि का कोई खेल खेलें, जैसे कि बैडमिण्टन, टेबल टेनिस इत्यादि। यदि आप एक treadmill या एक gym cycle खरीद सकें और उसे नियमित रूप से प्रयोग करें तो काफी लाभदायक होगा। वैसे सबसे सस्ता और सरल उपाय है कि आप रोज कुछ देर टहलने की आदत डाल लें।

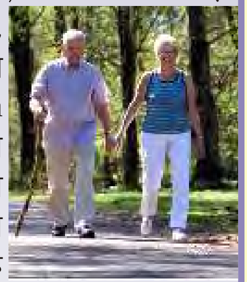

पर इसके अलावा भी कई कारणों से आपका वजन बढ़ सकता है।

क्या करें-

अब जब आप वजन बढ़ने का कारण जान गए हैं तो इसे कम करना आपकी इच्छाशक्ति और जानकारी पर निर्भर करता है।

१.सब्र रखें: याद रखिये कि आज जो आपका वजन है वो कोई दो दिन या दो महीने की देन नहीं है। ये तो बहुत समय से चली आ रही आपकी जीवनशैली का नतीजा है। और यदि आपको वजन कम करना है तो निश्चित रूप से आपको सब्र रखना होगा। बेंजामिन फ्रैंकलिन का ये कथन- 'जिसके पास धैर्य है वह जो चाहे वो पा सकता है।' हमेशा मुझे प्रेरित करता है। तो आप भी तैयार रहिये कि इस काम में वक्त लगेगा। हो सकता है शुरू के एक-दो हफ्ते आपको अपने वजन में कोई अंतर ना नजर आये पर यही वो वक्त है जहाँ आपको मजबूत बने रहना है, धैर्य रखना है, हिम्मत रखनी है।

२.अपने प्रयासों में यकीन रखिये: किसी भी और चीज से ज्यादा जरूरी है कि आप वजन कम करने के लिए जो प्रयास कर रहे हैं उसमें आपका यकीन होना। यदि आप एक तरफ रोजाना gym जा रहे हैं और दूसरी तरफ दोस्तों से ये कहते फिर रहे हैं कि जिम-विम जाने का कोई फायदा नहीं है तो आपका अवचेतन मस्तिष्क भी इसी बात को मानेगा, और सचमुच आपको अपने प्रयासों का कोई परिणाम नहीं मिलेगा। खुद से सकारात्मक बातें करना बहुत जरूरी है। आप खुद से कहिये कि, 'मैं फिट हो रहा हूँ', 'मुझे अच्छे परिणाम मिल रहे हैं', आदि।

३.Visualize करिए: आप जैसा दिखना चाहते हैं

वैसा ही खुद के बारे में सोचिये। यकीन जानिये ये आपको वजन कम करने में मदद करेगा। आप चाहें तो आप अपने कमरे की दीवार या कंप्यूटर स्क्रीन पर कुछ वैसी ही फोटो लगा सकते हैं जैसा कि आप दिखना चाहते हैं। रोज खुद को वैसा देखना उस चीज को और भी संभव बनाएगा।

४.नाश्ते के बाद पानी को अपना मुख्य पेय बनाएँ नाश्ते के वक्त फलों का रस, चाय, दूध इत्यादि जरूर लें लेकिन उसके बाद पूरे दिन पानी को ही पीने के लिए इस्तेमाल करें। कोल्ड-ड्रिंक को तो छुएँ भी नहीं और चाय-कॉफी पर भी पूरा नियन्त्रण रखें। इस तरह आप हर रोज करीब २००-२५० कैलोरी कम gain करेंगे।

५. Pedometer का प्रयोग करें: ये एक ऐसा यन्त्र है जो आप के हर कदम की गणना करता है। इसे अपने बेल्ट में लगा लें और कोशिश करें कि हर रोज १००० कदम अतिरिक्त चला जाये। जिनका वजन अधिक होता है वो आम तौर पर दिन भर में बस दो से तीन हजार कदम ही चलते हैं। यदि आप इसमें २००० कदम और जोड़ दें तो आपका वर्तमान वजन बना रहेगा और उससे ज्यादा चलने पर वजन कम होगा। एक standard

pedometer की कीमत १००० से १५०० रुपये तक होती है।

६.अपने साथ एक छोटी सी डायरी रखें: आप जो कुछ भी खाएँ उसे इसमें लिखें। एक शोध में पाया गया है कि जो लोग ऐसा करते हैं वो औरों से १५% कम कैलोरी gain करते हैं।

७.जानें आप कितनी कैलोरी लेते हैं, और इसमें १०% add करदें: यदि आपको लगता है कि आप हर रोज १८०० कैलोरी लेते हैं और फिर भी आपका वजन नियन्त्रित नहीं हो रहा है तो शायद आप अपनी कैलोरी intake का गलत अनुमान लगा रहे हैं। आम तौर पर यदि आप अपने अनुमान में १०% और जोड़ दें तो आपका अनुमान ज्यादा सटीक हो जायेगा।

उदाहरण के तौर पर : १८०० की जगह १८००+१८० = १९८० कैलोरी।

८.तीन बार खाने की बजाय ५-६ बार थोड़ा-थोड़ा खाएँ दक्षिण अफ्रिका में हुए एक शोध में ये पाया गया कि यदि व्यक्ति सुबह, दोपहर, शाम खाने की बजाय दिन भर में ५-६ बार थोड़ा-थोड़ा खाए तो वो ३०% कम कैलोरी gain करता है। और यदि वह उतनी ही कैलोरी ले रहा है जितना कि वो तीन बार खाने में लेता है तो भी ऐसा करने से शरीर कम insulin release करता है, जो कि आपके blood sugar को सही रखता है और आपको भूख भी कम लगती है।

९.रोज ४५ मिनट टहलिए रोज ३० मिनट टहलना आपका वजन बढ़ने नहीं देगा लेकिन यदि आप अपना वजन घटाना चाहते हैं तो कम से कम ४५ मिनट रोज टहलना चाहिए। अगर आप रोज ऐसा कर लेते हैं तो बिना अपना खान-पान बदले भी आप साल भर में १५ कि. ग्रा. वजन कम कर सकते हैं। और यदि आप ये काम सुबह-सुबह ताजी हवा में करें तो बात ही कुछ और है। पर इसके लिए आपको डालनी होगी सुबह जल्दी उठने की आदत। क्रमशः ....

साभार- डॉ. एन. शाह

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के
मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
अब मात्र आधी लागत में
₹ ४०
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आयेंगे
रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

Fit Hai Boss
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

पूर्णकृपायुक्त जननी अ
सन्तानों का सुर
और उन्नति चाहती है

– सत्यार्थप्रकाश पृ. ३

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुराम
प्रेषण कार्यालय– श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–
मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय– शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर ३